मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

जागृति
एक पहल

वर्ष 1 । प्रथम अंक । 2021

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

जागृति
एक पहल
वर्ष1 ।। प्रथम अंक ।। 2021

संरक्षक

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह, IAS
जिलाधिकारी, बुलन्दशहर

सह–संरक्षक
श्री अभिषेक पाण्डेय, IAS
मुख्य विकास अधिकारी,
बुलन्दशहर

निर्देशन
श्री महेंद्र सिंह राणा
उप शिक्षा निदेशक, डायट,
बुलन्दशहर

सह–निर्देशन
श्री अखंड प्रताप सिंह, PES
जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी,
बुलन्दशहर

सम्पादक मंडल

सुश्री चिंतन चौधरी,
सहायक अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय दारापुर,
विकास क्षेत्र पहासू, बुलन्दशहर

श्री विनीत पंवार,
सहायक अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय अम्बा,
विकास क्षेत्र अनूपशहर, बुलन्दशहर

श्री जोगेंद्र पाल सिंह,
प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय बीहरा नं0 1
विकास क्षेत्र – अगौता, बुलन्दशहर

श्रीमती गीतिका शर्मा,
सहायक अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय गनौरा शेख,
विकास क्षेत्र – गुलावठी, बुलन्दशहर

सह–सम्पादक मंडल

श्री अब्दुल रऊफ, सहायक अध्यापक
विकास क्षेत्र – अगौता

श्रीमती सुधा आर्या, सहायक अध्यापक
विकास क्षेत्र – अनूपशहर

श्रीमती शशि राठी, सहायक अध्यापक
विकास क्षेत्र – बुलन्दशहर

टंकण सहयोग

श्री जोगेंद्र पाल सिंह
प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय बीहरा नं01
विकास क्षेत्र – अगौता, बुलन्दशहर

श्री मनोज कर्दम
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय भूतगढ़ी,
विकास क्षेत्र – खुर्जा

श्री ललित कुमार
प्रधानाध्यापक
बड्डा वाजिदपुर–1
विकास क्षेत्र – स्याना

ग्राफिक्स डिजाईन

श्री विनीत पंवार
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय अम्बा,
विकास क्षेत्र अनूपशहर, बुलन्दशहर

सम्पादकीय

हमें यह कहते हुए वास्तव में गर्व और हर्ष हो रहा है कि हम **"जागृति– एक पहल"** पत्रिका के पहले अंक को लाने के लिए हम सभी नई आशाओं और रंगों के साथ तैयार हैं, जो निश्चित रूप से बुलंदशहर बेसिक शिक्षा विभाग के सबसे अविस्मरणीय और अनमोल पलों की दुनिया को उजागर करेगा। हमारे युवा लेखकों के जोशीले लेख पाठकों की रुचि को बनाए रखने के लिए निस्संदेह पर्याप्त हैं।

यह पत्रिका वास्तव में नवाचारी शिक्षकों की रचनात्मकता को आकार देने और जागरूक होने की कला सीखने का एक पवित्र प्रयास है क्योंकि हमारी सफलता हमारे देखने और तलाशने की शक्ति पर निर्भर करती है।

हमें यकीन है कि हमारे शिक्षकों द्वारा प्रदर्शित सकारात्मक दृष्टिकोण, कड़ी मेहनत, निरंतर प्रयास और नवीन विचारों से पाठकों के मन में निश्चित रूप से हलचल होगी और उन्हें ज्ञान के साथ–साथ असीम आनंद की असली दुनिया में ले जाया जाएगा। हमने इस खजाने में उत्कृष्टता लाने के लिए अथक प्रयास किए हैं। **हेलेन केलर** ने ठीक ही कहा है कि ''दुनिया न केवल अपने नायकों के शक्तिशाली प्रयासों से चलती है, बल्कि प्रत्येक ईमानदार कार्यकर्ता के छोटे–छोटे प्रयासों से भी चलती है।'' इस पत्रिका को संपादित करने का यह कठिन कार्य संपादकीय टीम के सदस्यों के ईमानदार समर्थन के बिना संभव नहीं होता, जिन्होंने हमारे उत्साही और जिज्ञासु लेखकों से प्राप्त लेखों की बाढ़ से लेखों को सुलझाया, उन्हें संपादित किया और अंत में बनाया उनमें से एक उचित मसौदा। हम अपने उन सभी साथियों के आभारी हैं जिन्होंने पत्रिका के अशांत जल में अपने पैरों को डुबोया और इसे प्रकाशन के किनारे तक पहुँचाया।

क्षमता होना अच्छी बात है लेकिन दूसरों में क्षमता खोजने की क्षमता ही असली परीक्षा है। हम इस अवसर पर सभी गणमान्य व्यक्तियों को 'संदेश' के रूप में पत्रिका के लिए अपनी शुभकामनाएं भेजने के लिए व अपना बहुमूल्य समय देने के लिए धन्यवाद देते हैं ।

हम सभी पाठकों को अपनी शुभकामनाऐं देते हैं और आशा करते हैं कि यह पत्रिका आपकी प्रशंसा का आनंद उठाएगी और बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए खुद को साबित करेगी।

रविन्द्र कुमार
आई.ए.एस.
जिलाधिकारी
बुलन्दशहर

(कार्य०) : 05732–280351
(आ०) : 05732–231343
(फैक्स) : 05732–280298
(मोबाइल) : 9454417563
(ई मेल) : dmbul@nic-in
जिलाधिकारी कार्यालय
बुलन्दशहर – 203001 (उ०प्र०)
अ.शा.प.सं० : 802 / ST DM / 202
दिनांक : 05 / 04 / 2021

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि जनपद बुलन्दशहर में बेसिक शिक्षा विभाग के शैक्षणिक नवाचारी शिक्षक–शिक्षिकाओं द्वारा **'जागृति : एक पहल'** नामक ई–पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत शैक्षणिक नवाचार, मौलिक कविता–कहानियां, बाल कहानियां एवं शिक्षाप्रद लेखों का समावेश किया जायेगा।

छात्रों में शिक्षा के प्रति अभिरूचि पैदा करने के लिए रोचक शिक्षण प्रविधियों एवं नवाचारों को अपनाये जाने की महति आवश्यकता है, जिससे छात्र–छात्राऐं शिक्षा का वास्तविक रूप से आनन्द ले सकें तथा खेल–खेल में ज्ञानार्जन कर सकें। ऐसा करने से छात्र–छात्राऐं, निःसंदेह, शिक्षा को लेकर उत्पन्न मानसिक तनाव एवं अवसाद से दूर रहेंगे तथा शिक्षकों के लिए भी शिक्षण कार्य बोझिल नहीं रहेगा। **अल्बर्ट आइंस्टीन** ने भी कहा है कि छात्रों में सृजनात्मक भाव और ज्ञान का आनन्द जगाना एक शिक्षक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण होता अस्तु, शिक्षण प्रविधि रोचक एवं मनोरंजक कैसे बने तथा बच्चे शिक्षा का आनन्द कैसे प्राप्त करें तथा खेल–खेल में कैसे सीखें, शिक्षकगण को इस ओर पर्याप्त ध्यान देना चाहिए।

मुझे उम्मीद है कि इस पत्रिका में शैक्षिक नवाचारपरक लेखों के साथ–साथ, पर्यावरण, स्वास्थ्य आदि वैश्विक एवं सामाजिक सरोकारों से संबंधित लेखों को भी सम्मिलित किया जायेगा तथा यह पत्रिका अध्यापन से सम्बद्ध सभी शिक्षक–शिक्षिकाओं के साथ–साथ विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं समाज के सभी सुधी नागरिकों के लिए भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ!

(रविन्द्र कुमार)

दूरभाष (का०) 0121–2664376 फैक्स 0121–2664376 मोबाईल 09453004037

राजेश कुमार श्रीवास, P.E.S.
मेरठ

मण्डलीय सहायक शिक्षा निदेशक (बेसिक)

शुभकामना संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि बेसिक शिक्षा विभाग, जनपद बुलन्दशहर के शिक्षकों ने ICT के विभिन्न साधनों व TLM के माध्यम से विभिन्न नवाचारों के द्वारा विद्यार्थियों के लिये एक उत्तम शिक्षण की व्यवस्था को बनाए रखा है। ऐसे शिक्षकों के नवाचारों को **"जागृति – एक पहल"** नामक पत्रिका में संकलित करके बेसिक शिक्षा विभाग, बुलन्दशहर द्वारा अनुकरणीय व सराहनीय कार्य किया जा रहा है। निःसंदेह यह पत्रिका बेसिक शिक्षकों के लिये प्रेरणा देने के साथ–साथ नवीन तकनीक व नवाचारों द्वारा विद्यार्थियों को उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करने के लिये भी अहम भूमिका अदा करेगी।

इस पत्रिका के लिये मैं बेसिक शिक्षा विभाग, जनपद बुलन्दशहर को बहुत–बहुत बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(राजेश कुमार श्रीवास)
मण्डलीय सहायक शिक्षा निदेशक (बेसिक)
मेरठ

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

महेन्द्र सिंह राणा (पी0 ई0 एस0)
उप–शिक्षा निदेशक / प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
जनपद– बुलन्दशहर

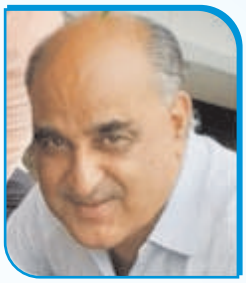

शुभकामना संदेश

बहुत ही हर्ष और प्रसन्नता का विषय है कि जनपद बुलन्दशहर के शिक्षकों द्वारा विभिन्न माध्यमों का प्रयोग करते हुऐ विद्यार्थियों के लिए शिक्षण अधिगम को अधिक सरल बनाने के लिए विभिन्न नवाचारों का प्रयोग किया है। ऐसे नवाचारों, स्वनिर्मित कविताओं व कहानियों, टी०एल०एम० का संकलन **"जागृति–एक पहल"** नामक पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि अन्य सभी शिक्षक भी इस पत्रिका को प्रेरक के रूप में ग्रहण करते हुये अपने शिक्षण में तकनीक व नवाचारों से विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य निर्माण व प्रकाशन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेंगे। "मैं इस पत्रिका के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, सम्पादक मण्डल एवं सभी शिक्षकों को बधाई व शुभकामनाएँ देता हूँ।

(महेन्द्र सिंह राणा)

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

अखण्ड प्रताप सिंह
(पी०ई०एस०)
जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, बुलन्दशहर।

संदेश

प्रिय महोदय / महोदया,

मुझे यह जानकर अति हर्ष हो रहा है कि कु0 चिन्तन चौधरी, श्री विनीत पंवार, श्रीमती सुधा आर्य, श्रीमती शशी राठी, जोगेन्द्र पाल सिंह आदि शिक्षकों की टीम द्वारा जनपद के परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों में नवाचार एंव जाग्रति का संचार करने के उद्देश्य से शिक्षक चिन्तन एवं शिक्षा नवाचार के परस्पर समन्वय एंव सहयोग/नवाचार, प्रेरणा हेतु **"जागृति–एक पहल"** नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षक समाज का दर्पण होता है, तथा शिक्षा मन के अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है, मुझे आशा है कि उक्त पत्रिका में बेसिक शिक्षा में शिक्षक/शिक्षण आयामों पर आदर्श प्रस्तुत किये जायेंगे, साथ ही पत्रिका में शिक्षकों हेतु स्वनिर्मित नवाचारों के साथ परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों/छात्रों के लिये उपयोगी विभिन्न पाठ्य सामग्री का प्रकाशन किया जायेगा। मै यह भी आशा करता हूं कि **"जागृति – एक पहल"** नामक पत्रिका के माध्यम से जनपद के बेसिक शिक्षा में एक नई ऊर्जा/चेतना/जागृति का संचार होगा तभी उक्त पत्रिका का उद्देश्य सार्थक सिद्ध होगा। बेसिक शिक्षा में शिक्षा को पत्रिका के माध्यम से नवाचार/समस्या निराकरण विषयक सामग्री का प्रकाशन खुद एक नवाचार साबित हो।

पत्रिका के प्रकाशन और सफलता की ईश्वर से मंगलकामना करता हूँ।

प्रतिष्ठा में
"जागृति–एक पहल" – टीम

(अखण्ड प्रताप सिंह)

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

सत्यपाल सिंह तोमर
वित्त एवं लेखाधिकारी
(बेसिक शिक्षा विभाग)
जनपद बुलन्दशहर।

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति हर्ष हो रहा है कि विनीत पंवार, चिन्तन चौधरी, श्रीमती गीतिका शर्मा, जोगेंद्रपाल सिंह, श्रीमती सुधा आर्या आदि शिक्षकों की टीम द्वारा जनपद के परिषदीय विद्यालयों में शिक्षकों में नवाचार एवं जागृति संचार करने के उद्देश्य से शिक्षकों में चिन्तन एवं शिक्षा नवाचार के परस्पर समन्वय एवं संयोग/नवाचार, प्रेरणा हेतु **"जागृति–एक पहल"** नामक पत्रिका का जनपद बुलन्दशहर में प्रथम बार प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा है कि उक्त पत्रिका में शिक्षकों हेतु स्वनिर्मित नवाचारों के साथ परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों/छात्रों के उपयोगी विभिन्न पाठ्य सामग्री का प्रकाशन किया जायेगा। **"जागृति–एक पहल"** नामक पत्रिका के माध्यम से जनपद के बेसिक शिक्षा में एक नई ऊर्जा/चेतना/जागृति का संचार होगा।

पत्रिका के प्रकाशन और सफलता की ईश्वर से मंगलकामना करता हूँ।

(सत्यपाल सिंह तोमर)

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

शुभकामना संदेश

हमें यह जानकर अत्यन्त गर्व हो रहा है कि बेसिक शिक्षा विभाग जनपद बुलन्दशहर उत्तर प्रदेश में कार्यरत शिक्षकों द्वारा **"जागृति–एक पहल"** नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसमें जनपद बुलन्दशहर के कर्मठ शिक्षकों द्वारा अपने–अपने विद्यालयों में अनेक तकनीकी माध्यमों द्वारा शिक्षण कार्य को सुचारू रूप से चलाने हेतु किये गये नवाचारों एंव गतिविधियों का संकलन किया गया है। आप सभी शिक्षक पूरे शैक्षिक जगत के लिए प्रेरणा स्रोत हैं एवं हमें पूर्ण आशा है कि आपके द्वारा किये गये नवाचारों से सभी शिक्षक उत्प्रेरित होकर अपने विद्यालयों में शिक्षण स्तर को बेहतर बनाने की दिशा में सार्थक प्रयास करेंगे। ग्रामीण क्षेत्रों में अध्यापक व अध्यापिकाओं को पढ़ाने में बहुत सारी परेशानियां तो सामने आयेंगी लेकिन हमें स्कूलों में प्रेरणा लक्ष्य को हासिल करने के लिए तकनीकी माध्यम का प्रयोग करते हुये छात्रों को शैक्षिक कार्यों से जोड़ना होगा।

हम चिन्तन चौधरी व उनकी पूरी टीम को इस कार्य के लिए बधाई देते हैं एवं आशा करते हैं कि आप सभी शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता बेहतर बनाने के लिए कार्य करते हुये शैक्षिक जगत में नये आयाम स्थापित करेंगे।

स्व0 श्री विनोद चौधरी
खण्ड शिक्षा अधिकारी, बुलन्दशहर

श्री प्रकाशचंद
खण्ड शिक्षा अधिकारी, अगौता

श्री अजहरे आलम
खण्ड शिक्षा अधिकारी, लखावटी

श्री योगेश गुप्ता
खण्ड शिक्षा अधिकारी, बुलन्दशहर

श्री महेश पटेल
खण्ड शिक्षा अधिकारी, सिकंदराबाद

श्री भुपेन्द्र सिंह,
खण्ड शिक्षा अधिकारी, खुर्जा

श्री बुधसेन सिंह
खण्ड शिक्षा अधिकारी, अनूपशहर

श्री चन्द्र भूषण प्रसाद
खण्ड शिक्षा अधिकारी, स्याना

श्रीमती कुसुम सैनी
खण्ड शिक्षा अधिकारी, दानपुर

श्री पुष्पेन्द्र सिंह
खण्ड शिक्षा अधिकारी, पहासू

श्री हरी किशोर
खण्ड शिक्षा अधिकारी, गुलावठी

श्री सुनील कुमार
खण्ड शिक्षा अधिकारी, शिकारपुर

श्री ओम नारायण सिंह
खण्ड शिक्षा अधिकारी, बी0बी0 नगर

श्री गिरीश कुमार
खण्ड शिक्षा अधिकारी , ऊँचागांव

सुश्री रिचा शर्मा
खण्ड शिक्षा अधिकारी, डिबाई

श्री यशवन्त कुमार
खण्ड शिक्षा अधिकारी, अरनियाँ

डायट मेंटर्स की कलम से.....

शुभकामना संदेश

हमें यह जानकर अत्यन्त गर्व हो रहा है कि बेसिक शिक्षा विभाग जनपद बुलन्दशर उ0प्र0 में कार्यरत शिक्षकों द्वारा **"जागृति–एक पहल"** नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कोरोना काल के इस दौर में बच्चों का शिक्षण बहुत ही प्रभावित हुआ है इस बात का संतोष है कि विभागीय निर्देशों के क्रम में शिक्षण कार्य जारी रखने के साथ ही कुछ कर्मठ शिक्षकों द्वारा बच्चों को शिक्षा देने के लिए कुछ नवाचारों द्वारा प्रयास किये जा रहे हैं। जनपद बुलन्दशहर के बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा किये गये प्रयास विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। यह पत्रिका बेसिक शिक्षकों के लिए प्रेरणा देने के साथ–साथ नवीन तकनीक द्वारा विद्यार्थियों को उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त करने के लिए भी अहम भूमिका अदा करेगी। ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ रहे बच्चों के लिए इन नई तकनीकियों द्वारा समस्याऐं तो आयेंगी ही लेकिन शिक्षकों द्वारा स्कूलों में शैक्षणिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए तकनीकी माध्यमों का प्रयोग करना होगा। हम जनपद के सम्मानित शिक्षकों को व विशेष रूप से चिन्तन चौधरी, विनीत पंवार, सुधा आर्या, शशी राठी, जोगेन्द्र पाल सिंह को शुभकामनायें देते हैं। जिनके सम्पादन में यह पत्रिका प्रकाशित हो रही है। यह पत्रिका प्रेरणादायक व अनुकरणीय होगी।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बुलन्दशहर की तरफ से हार्दिक शुभकामनाऐं।

श्री के0डी0एन0 राम
वरिष्ठ प्रवक्ता

श्री रविशंकर
प्रवक्ता हिन्दी

श्रीमती तरन्नुम जहाँ
प्रवक्ता अंग्रेजी

श्री अखिलेश सिंह
प्रवक्ता सा0 विज्ञान

श्रीमती अर्चना एस0पी0 सिंह
प्रवक्ता समाज कार्य

श्री जिलेश कुमार
प्रवक्ता शा0 शिक्षा

डॉ0 ललित कुमार
प्रवक्ता सांख्यिकी

श्रीमती रंजिता रानी
प्रवक्ता शिक्षा शास्त्र

डॉ0 पूनम
प्रवक्ता शिक्षा शास्त्र

श्रीमती पिंकी पवांर
प्रवक्ता मनोविज्ञान

डॉ0 वन्दना दुबे
प्रवक्ता सा0 विज्ञान

श्री अरविन्द कुमार
प्रवक्ता जीव विज्ञान

श्रीमती स्वीटी चौधरी
प्रवक्ता गणित

डॉ0 मीनाक्षी
प्रवक्ता कला

श्रीमती मंजित कौर खनूजा
प्रवक्ता रसा0 विज्ञान

श्रीमती रीना रानी
प्रवक्ता गृह विज्ञान

डा0 पारुल त्रिपाठी
सह.प्रवक्ता;मानव.विकास
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

शुभकामना संदेश

विधाता ने आपके जैसे कर्मठ एवं शिक्षा के प्रति समर्पित शिक्षकों के सानिध्य होने का सौभाग्य प्रदान किया इस के लिए मैं परमपिता परमेश्वर की आभारी हूँ। यह बधाई सन्देश लिखते हुए मैं बहुत गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ। बुलन्दशहर मेरी जन्म स्थली है इसलिए इतने गुणी शिक्षकों द्वारा विद्यालय में शिक्षा के महत्व को बढ़ाने के साथ–साथ सौन्दर्यात्मक पहलू पर जो आपका कठिन परिश्रम है, वह अतुलनीय है। ग्रामीण बच्चों में शिक्षा एवं विद्यालय के प्रति आदर व प्रेम की भावना को जागृत करने में आपका प्रयास निःसन्देह सराहनीय है। विद्यालय में दीवारों पर अंकित चित्र व पौधों की सुन्दर क्यारियाँ आपके प्रयासों का सुन्दर उदाहरण है।

मेरी आप सभी के लिए यही शुभकामनाऐं है कि आप निरन्तर इसी प्रकार प्रगति के पथ पर अग्रसर रहें, आपकी अभूतपूर्व सफलता के लिऐ आपको बहुत–बहुत बधाई।

डा0 पारुल त्रिपाठी
सह. प्रवक्ता; मानव विकास
वन स्थली विद्यापीठ, राजस्थान

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

चिंतन चौधरी
स0अ0
प्राथमिक विद्यालय दारापुर
विकास क्षेत्र पहासू

जोगेन्द्र पाल सिंह
प्र0अ0
प्रा0वि0बीहरा नं01
विकास क्षेत्र अगौता

शुभकामना संदेश

शैक्षिक संवर्धन की दिशा में नित–नई ऊर्जा को संचित करते हुए प्रगति की ओर उन्मुख मेरे सभी शिक्षक साथियों, आज बड़ा गर्व महसूस हो रहा है कि आप जैसे कर्मठ, समर्पित सहयोगियों का सानिध्य हमें प्राप्त हो रहा है।

बुलन्दशहर की इस धरा पर जो कि हमारी कर्म स्थली है, यहाँ पर इतने प्रतिभावान शिक्षक साथी हैं, जो कि विद्यालय के जीर्णोद्धार के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में पूर्ण मनोयोग एवं आदर–प्रेम से शिक्षण अधिगम को मूर्त रुप देने की प्रेरणा से प्रेरक बनने की ओर अग्रसर हो रहे हैं, आपकी प्रेरणा एंव मेहनत के प्रति हम सम्मान सहित नतमस्तक हैं। आप के विद्यालय की प्रत्येक दीवार जो कि शैक्षिक परिदृश्य के संवर्धन में शिक्षण सहगामी क्रियाओं से सजी हुई है, आपकी मेहनत व समर्पण की एक झलक है।

आप इसी तरह अपने शैक्षिक परिदृश्य परिवर्तन के इस कारवां को अपनी मेहनत व अनूठे कार्यों से ऐसे ही बढाते रहें ओर जनपद बुलन्दशहर का नाम प्रदेश एवं देश में रोशन करते रहें। शैक्षिक संवर्धन के इस विचार की सार्थकता को परिकल्पित करते हुए, इस पत्रिका का आमूल्य उददेश्य ही आपकी छुपी हुई प्रतिभाओं को मंच देना है। आप सभी के सराहनीय प्रयासों को शुभकामनाओं के साथ आपकी इस महत्वपूर्ण सफलता के लिये बहुत–बहुत बधाई।

चिंतन चौधरी **जोगेन्द्र पाल सिंह**

विषय - सूची

क्र. स.	विषय		पृष्ठ सं
1.	शैक्षणिक संवर्धन	रंजीता रानी	1
2.	शिक्षण अनुभव – मेरा कर्तव्य पथ	गीतिका शर्मा	3
3.	शैक्षिक नवाचार	चिन्तन चौधरी	4
4.	यात्रा वृतांत – हरियाली से सरोबर फागू	शशि राठी	5
5.	अंग्रेज़ी लेख – OUR NATIONAL FLAG	गीता चौधरी	7
6.	लेख शिक्षा का बदलता स्वरुप	कर्मवीर सिंह	8
7.	नवाचार – गणित की संक्रियाएं	नीतू गौतम	9
8.	**विद्यालयों का बदलता स्वरूप**	**प्रा0वि0 बीहरा नं01**	**10–11**
9.	पोषण टोकरी	रिंकू	12
10.	कविता – किताबें	शिखा हुक्कु	13
11.	कविता – पूछा है मेरी बेटी ने	शिखा त्यागी	13
12.	करें योग, रहें निरोग	शिल्पी गोयल	14
13.	कविता – शिक्षा के नए आयाम	भारती मांगलिक	17
14.	लेख – शिक्षक और समाज	अब्दुल रऊफ	18
15.	कविता– मेरा प्यारा प्राइमरी स्कूल	सुनीता सोलंकी	19
16.	**विद्यालयों का बदलता स्वरूप**	**प्रा0वि0 दारापुर**	**20–21**
17.	शिक्षण अनुभव – विद्यालय में नवीन नामांकन	पिंकी वर्मा	22
18.	टी एल एम घड़ी का वर्किंग मॉडल निर्माण	सीमा रानी	23
19.	प्रेरक प्रसंग – अनमोल वचन	विनीता रानी	24
20.	कविता – मेरी कल्पना	स्वाती शर्मा	25
21.	टी एल एम – उपसर्ग	नीतू कात्याल	26
22.	आओ बताएं एक तथ्य	नीतू खरबंदा	27
23.	कविता– गुरु	सविता चौधरी	28
24.	यात्रा वृतांत – दिल्ली की सैर	शकील खान	29
25.	**विद्यालयों का बदलता स्वरूप**	**प्रा0वि0 गनौराशेख**	**30–31**

क्र. स.	विषय		पृष्ठ सं
26	शैक्षिक नवाचार	नीतिका	32
27.	कविता – मैं शिक्षक हूँ	कुमार विनय	33
28.	कविता – जग के दुलारे प्यारे बच्चे	सुधा आर्या	33
29.	कबाड़ से जुगाड़	सलीम अख्तर	34
30.	अंग्रेजी लेख – एजुकेशन	रिचा चौधरी	35
31.	प्रेरक प्रसंग – चन्द्र शेखर आज़ाद	जोगेन्द्र पाल सिंह	36
32.	**विद्यालयों का बदलता स्वरूप**	**उ0प्रा0वि0 औरंगाबाद**	**38–39**
33.	कविता – पीड़ा	भारती खत्री	40
34.	कविता – मेरा सपना	सविता	41
35.	टी एल एम निर्माण – मेजिक कलर बॉक्स	नीरज गौर	42
36.	टी एल एम निर्माण – अक्षरों का अबेकस	छवि शर्मा	43
37.	कविता – कायाकल्प	श्वेता शर्मा	44
38.	कविता – मेरी माँ	ललित कुमार	45
39.	कविता – हम शूरवीर कहलाते हैं	धर्मेन्द्र कुमार शर्मा	46
40.	लेख – समुदाय की सहभागिता	अंजना महेन्द्र सिंह	47
41.	एक शिक्षाप्रद हिन्दी कहानी	अलका चौधरी	49
42.	**विद्यालयों का बदलता स्वरूप**	**प्रा0वि0 नौसाना**	**50–51**
43.	मेरा प्यारा बचपन	मनोज कुमर कर्दम	52
44.	विज्ञान – जल चक्र	आशु शर्मा	54
45.	कविता – स्वेटर	अर्चना सिंह	56
46.	कविता – त्यौहार	जिज्ञासा ढ़ीगरा	57
47.	**विद्यालयों का बदलता स्वरूप**	**उ0प्रा0वि0 दरियापुर**	**58–59**
48.	प्रेरणा गीत – योग	गायत्री	60
49.	कविता– शिक्षा	रवि गौतम	60
50.	शिक्षण अनुभव – मेरा विद्यालय	ऋषि सिंह	61
51.	शख्सियत	गीता तेवतिया	62
52.	कविता – कबाड़ से जुगाड़	सुरभि रानी	62

क्र. स.	विषय		पृष्ठ सं
53.	शैक्षिक नवाचार – कविता वाचन एक कला	हरिओम सिंह	63
54.	शिक्षण अनुभव – मेरी शिक्षण यात्रा	मधु जौहरी	64
55.	क्या होता है कम्प्यूटर जी	गीता वर्मा	65
57.	**एस्ट्रॉनोमी लैब,**	**प्रा0वि0 मुकुंदगढ़ी**	**66**
58.	**मिशन शक्ति, महिला सशक्तिकरण, बेटी बचाओ बेटी बढ़ाओ**	**टीम मिशन शक्ति बुलन्दशहर**	**67**
56.	नवाचार – समतुल्य भिन्न	दीप्ति कौत्स	68
59.	यात्रा वृतांत – ऐतिहासिक शहर अजमेर	अनिल कुमार, विनीत पंवार	69–70

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश
जागृति
एक पहल
वर्ष1 II प्रथम अंक II 2021

शैक्षणिक संवर्धन

रंजीता रानी
प्रवक्ता, शिक्षा शास्त्र

प्रभावी कक्षा-प्रबंधन: रणनीतियाँ

एक अच्छा तथा प्रभावशाली कक्षा–प्रबन्धन शिक्षक की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रबन्धन में सहायक होता है, जिसके द्वारा कक्षा. कक्ष वातावरण को स्वास्थ्यवर्धक, क्रियाशील, तनावमुक्त तथा प्रेरक गतिशील बनाया जा सकता है। व्यावसायिक विकास में सहायक है, व्यस्थित दृष्टिकोण, छात्र व्यवहार तथा शैक्षणिक जुड़ाव में वृद्धि करता है। शिक्षक–छात्र संबधों को मजबूत बनाता है।

कक्षा प्रबंधन की रणनीतियाँ:

- आदर्श व्यवहार
- छात्रों को दिशा–निर्देश स्थापित करने में
- पारस्परिक समझ
- दमनात्मक दण्ड की अपेक्षा प्रभावात्मकता पर बल
- छात्र पहल कदमी पर बल
- छात्र का मार्गदर्शन–अग्रसरण
- अन्तः क्रिया को बढ़ावा
- प्रतियोगिता तथा प्रतिस्पर्धा पर बल
- व्यवहार सुदृढ़ीकरण हेतु पुरुस्कार
- सकारात्मक सोच का विकास
- उत्साह हेतु पाठ को रोमांचित बनाना
- निःशुल्क अध्ययन गतिविधियों पर बल
- समूह में अध्ययन की आदत विकसित करना
- प्रोजेक्ट फार्म पर बल
- उत्तरदायित्व की भावना पर बल
- मूल्यांकन हेतु अंक नहीं प्रोत्साहन
- योग्यता, रुचि व क्षमता को प्रदर्शित करने का अवसर
- व्यक्तिगत रुप से परिवर्तन, सुधार हेतु सुझाव

- आवश्यकतानुसार अवसर व संघर्ष पर बल
- छात्रों को साक्षात्कार हेतु तैयार करना
- बुरे बनकर शिक्षण गतिविधियों पर बल
- व्यक्तिगत सीखने पर बल छात्र के निदान व उपचार में सहायक आदि

प्रभावशाली कक्षा–प्रबंधन की उपरोक्त रणनीतियाँ शिक्षक की शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को भी प्रभावशाली बनाने पर बल देती है तथा एक अच्छे शिक्षक की गुणवत्ता को भी इंगित करती है कि किस प्रकार शिक्षक अपनी मेहनत तथा अच्छे व्यवहार का प्रदर्शन तथा पदार्पण कर छात्रों को अपनी शिक्षण शैली की ओर अभिप्रेरित करता है।

किस प्रकार से छात्रों को प्रभावी रुप से विभिन्न परिस्थितियों में कार्य करने व सीखने पर बल देती है।

शिक्षक के लिये भी यह आवश्यक है कि वहः–

- विनम्र व मृदुभाषी हो।
- आखों से संपर्क बनाये ताकि छात्रों का ध्यान इधर. उधर न भटके।
- मोबाईल फोन से उचित दूरी।
- सभी छात्रों की समान सहभागिता हेतु अवसर प्रदान करें।
- सभी छात्रों को सम्मानीय दृष्टि से अपने आदर्श को प्रस्तुत करें।
- सभी छात्रों को कक्षा के नियमों से अवगत करायें।
- छात्रों की मदद के लिए तैयार हो।
- पारस्परिक समझ व अपेक्षाओं को पूरा करना।
- छात्र के विचारों की अभिव्यक्ति व सम्मान दें।
- महत्वपूर्ण विधियों, घटनाओं व विषय वस्तु की समझ को बढावा दे।
- दण्डात्मक, अनुशासन पर बल न देकर स्वानुशासन पर बल दे।
- छात्र की पहल को स्थान देकर उसे संतुष्ट करें।
- छात्र द्वारा किये गये कार्यो की प्रशंसा करें।
- प्रोत्साहन हेतु कक्षा को प्रेरित करें।

इस प्रकार बहुत सी आवश्यक बातें हैं जो कि शिक्षक के लिए आवश्यक है। उत्तरदायित्व का सही निर्वहन ही शिक्षक की संतुष्टि का आधार है और यह संतुष्टि ही हम शिक्षकों के लिऐ खुशी का सूचक होती है। हमारी अपने आप से स्वयं संतुष्टि आवश्यक है तभी तो हम छात्रों के साथ एक उदाहरण के रुप में अपने आदर्श को प्रस्तुत कर पाएंगें।

शिक्षक चाहे तो हर भरसक प्रयास द्वारा छात्र का मनोबल बढ़ाकर उसके अनियंत्रित व्यवहार को नियंत्रित कर इच्छित दिशा. निर्देश देकर वांछित व्यवहार का परिर्माजन कर सकता है।

Education is the Modification of Behaviour

मेरा कर्तव्य पथ

श्रीमती गीतिका शर्मा
प्रधानाध्यापिका
प्रा0 वि0 गनौराशेख
वि0 क्षे0:. गुलावठी

लहरों से डरकर नौका कभी पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

इन्हीं पंक्तियों के साथ अपने कर्तव्य पथ पर चलना आरम्भ किया था सन् 2006 में। पूरा परिवार शिक्षा के क्षेत्र से जुडे होने के कारण शिक्षक के रुप में कुछ करने का जज्बा प्रारम्भ से ही था। 15 मई 2015 में प्रा0वि0 गनौरा शेख, गुलावठी में प्रधानाध्यापिका के पद पर विद्यालय में नियुक्त हुई, देखा कि समस्त स्टाफ पूर्ण रुप से ऊर्जा से भरा हुआ है लेकिन संसाधनों का अभाव है।

विद्यालय से सम्बंधित समस्याओं को दूर करने के लिए गांव के बुद्धिजीवी वर्ग से सहयोग लेकर भौतिक परिवेश को सुरम्य बनाया गया। छात्रों को गत् पाँच वर्षों से संगीतमय वातावरण में प्रार्थना, विद्यालय के एक अध्यापक द्वारा प्रतिदिन एक नई प्रेरणास्पद कहानी सुनाना, बच्चों द्वारा प्रतिदिन दो खबरें; अखबार, से पढ़कर सुनाना जैसे कार्य प्रारम्भ कर दिए गये। सबसे अधिक प्रभाव पड़ा 'आज का विचार' जैसे नवाचार का। बच्चों में उत्सुकता रहती थी कि आज बोर्ड पर क्या विचार होगा, विद्यालय के वार्षिकोत्सव में कौन–कौन Best Student, Best Parents, Regular Student, Beautiful Bag जैसे एवार्ड जीतेगा।

इसी यात्रा में आगे बढते हुए एक नयी पहल की, कक्षा 5 उत्तीर्ण छात्रों से एक.एक पौधा लगाने की। जिसकी ग्रामवासियों ने पूरे उत्साह के साथ भागीदारी की और सारा विद्यालय हरा–भरा हो गया।

छात्रों को पढ़ाते.पढ़ाते एक छात्रा ने प्रश्न किया मैम दिल्ली कैसी होती है? यह सुनकर बहुत अजीब लगा कि ये बच्चे गाँव से बाहर की दुनिया को जानते ही नहीं है यह सोचकर सभी अध्यापकों ने निजी व्यय से एक बस की और चल दिए अपने प्यारे बच्चों के साथ गाते–मुस्काते दिल्ली की ओर.....बच्चों की उस खुशी ने, उस खिलखिलाहट ने सभी में एक नयी ऊर्जा का संचार कर दिया।

आज विद्यालय में बच्चों के लिए सभी सुविधाऐं, लाभदायक लाइब्रेरी, भरपूर प्रिंटरिच मैंटेरियल, आकर्षक TLM, शब्दों की दीवार, कविताओं का कोना जैसे आकर्षक नवाचारों को अपनाया जा रहा है।

अपनी इस 5 वर्षों की यात्रा को आप सभी से साझा कर अद्भुत अनुभव हुआ साथ ही और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी मिली। कोशिश रहेगी जिस भावना के साथ शिक्षा का क्षेत्र चुना था वो और प्रबल बने और अन्त में फिर वही कि.....

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

शैक्षिक नवाचार

चिंतन चौधरी (स0अ0)
प्रा0वि0 दारापुर, वि0ख0 पहासू
बुलन्दशहर

उद्देश्यः—

बच्चों को विद्यालय परिवेश के अनुरुप एवं वातावरण में उपलब्ध संसाधनों (गमलों) का उपयोग कर शिक्षण अधिगम को रुचिकर बनाना

क्रियाविधिः—

कक्षा में शिक्षण—अधिगम को अधिक रुचिकर बनाने में विद्यालय परिसर में उपलब्ध गमलों का शिक्षण सहायक सामग्री के रुप में प्रयोग कर हम कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों को हिन्दी, गणित, हमारा परिवेश इत्यादि विषयों के ज्ञान को अधिक रोचकता प्रदान कर सकते हैं। इस शिक्षण सहायक सामग्री के द्वारा हम प्राथमिक कक्षाओं में संख्या पूर्व अवधारणा, कम ज्यादा, दूर—पास, हल्का—भारी, गिनती, इकाई—दहाई का ज्ञान मूर्त रुप में करा सकते हैं। गमलों पर लिखे हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों का ज्ञान, अंग्रेजी की वर्णमाला का ज्ञान, व रंग बिरंगे गमलों की सहायता से छात्रों को रंगों की पहचान कराकर उनके रंग संबंधी ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं। इससे आगे हम कक्षा 3,4,5 के छात्रों को हमारा परिवेश से संबंधित पौधों के भागों के विषय में गमले में पौधे लगाकर आसानी से समझाया जा सकता है।

इसके साथ—साथ प्रकाश संश्लेषण की क्रिया को भी आसानी से समझाया जा सकता है। इस प्रकार हम कक्षा में सौन्दर्यीकरण करने की गतिविधि को इस शिक्षण सहायक सामग्री के माध्यम से करा सकतें हैं।

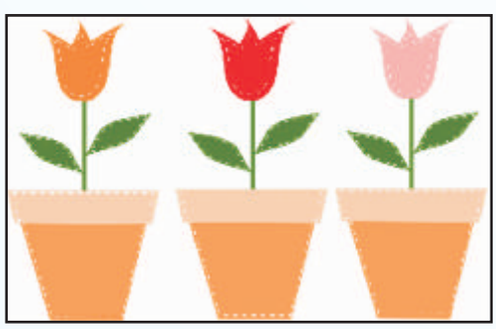

निष्कर्षः—

इन प्रयासों के सकारात्मक परिणाम मेरे विद्यालय में शिक्षण अधिगम की स्थिति में काफी सुधार हुआ। बच्चे अब सिर्फ गमले ही नहीं अपितु अन्य वातावरणीय सहायक सामग्रियों को ज्ञानार्जन में प्रयोग करने लगे हैं और पहले से अधिक रोचकता के साथ विद्यालय में उपस्थित होने लगे है। शिक्षा के सृजन में मेरा यह विचार सार्थक सिद्ध हो रहा है।

धन्यवाद

यात्रा वृतांत-हरियाली से सराबोर फागू

श्रीमती शशि राठी
सहायक अध्यापिका (शिक्षक संकुल)
उच्च प्राथमिक विद्यालय दरियापुर
बुलन्दशहर

एक कहावत तो आपने सुनी ही होगी कि "जाना था जापान पहुंच गए चीन'' ऐसा ही कुछ मेरे साथ हुआ। दिसंबर के अंतिम सप्ताह में नैनीताल जाने पर सहमति बनी। 25 दिसंबर को जाना था। हमारे परिवार के साथ मेरे पति के घनिष्ठ मित्र व उनका परिवार भी जा रहा था। परंतु किसी कारण वश हम 25 दिसंबर को नहीं जा पाए, चार दिनों की ट्रिप में से मानो एक दिन बैठे–बिठाए ही गायब।

हमारी सारी पैकिंग हो चुकी थी। रात के करीब 10:00 बजे थे, अचानक सलाह बनी कि अभी रात में ही निकलते हैं जिससे कल का दिन बचाया जाए इनके मित्र भी तैयार हो गए उन्हें दिल्ली से आना था तो थोड़ा सा समय और लग गया रात करीब 2:00 बजे हम सब नैनीताल के लिए निकले..
..मित्रों जब हम कहीं जा रहे होते हैं तो उसका एक काल्पनिक सा चित्र हमारे सामने घूमने लगता है मेरे साथ भी ऐसा ही हो रहा था। परंतु 15 मिनटों में ही यह सब कुछ बदल गया क्योंकि अब हम ईस्टर्न पेरीफेरल हाईवे पर थे। मैंने उत्सुकता वश पूछा कि हम कहां जा रहे हैं? इनका उत्तर था...घूमने हा हा हा।

सफर बहुत रोमांचक था कुछ समय बाद मेरी आंख लग गई। सुबह जब आंखें खुली तो सामने बोर्ड था शिमला। सुबह करीब 9:00 बजे हम शिमला पहुंच चुके थे। माल रोड देखी चहल–पहल ऐसी ही थी जैसे अपने शहर में होती है कुछ खास अंतर नहीं लगा। मैं मन ही मन सोच रही थी कि नहीं शिमला नहीं..... खैर गाड़ी शिमला में नहीं रुकी। शिमला से कुछ किलोमीटर आगे चलकर हम गाड़ी से बाहर उतरे। ठंडी हवाएं, सूरज की किरणों से सराबोर नैसर्गिक सुंदरता का दृश्य.. ग्रीन वैली। अत्यंत मनमोहक, शांत... हमने कुछ समय वहां बिताया और आगे बढ़ चले। आगे कस्बा आया कुफरी, पहाड़ों के बीच बसा कुफरी...यह वही जगह थी जहां हमें रुकना था परंतु मेरे 6 वर्षीय बेटे ने कहा पापा यहां तो बर्फ ही नहीं है, फिर मेरा स्नोमैन?.... सभी हंसने लगे.....। वहां के स्थानीय निवासी एक व्यक्ति ने कहा बेटा अगर स्नोमैन बनाना है तो फागू जाओ..... फागू एक गांव है जो कि शिमला से लगभग 23 किलोमीटर दूरी पर स्थित है फिर क्या हम सब फागू के लिए निकल पड़े। लगभग 2 किलोमीटर चले ही थे कि बच्चे चिल्लाए बर्फ... बर्फ.. बर्फ,..... वास्तव में सड़क के किनारे घास पर जगह–जगह बर्फ़ पड़ी थी। जैसे जैसे आगे की तरफ बढ़े बर्फ़ भी बढ़ती जा रही थी और बच्चों की आंखों की चमक भी। हमने वहां पर होटल लिया और सभी होटल से तैयार होकर फागु घूमने निकले। 9000 फीट की ऊंचाई पर स्थित फागू गांव प्राकृतिक सौंदर्य जिसमें कूट–कूट कर भरा हुआ है कहीं–कहीं पर बर्फ की सफेद परत, हरियाली से सराबोर फागू.. प्रदूषण का तो कोई नामोनिशान ही नहीं जहाँ हमने सेब के बगीचे भी घूमे, आपको तो पता ही है शिमला के सेब कितने प्रसिद्ध हैं।

फागू जहां की आर्थिक स्थिति पूरी तरह सेब की फसल पर ही आश्रित है पहले दिन हमने पूरा फागू गांव घुमा। एक निवासी ने हमें बताया कि यहां पूरे वर्ष फॉग यानी कोहरा रहता है इसलिए अंग्रेजों द्वारा इसे फॉग के नाम पर फागू नाम दिया गया वास्तव में भी ऐसा ही प्रतीत होता है कि हम बादलों से ऊपर खड़े हैं।

अगला पूरा दिन एडवेंचरस गेम्स में ही बीत गया। शाम के वक्त जब हम सभी बोन फायर के चारों तरफ बैठकर अपने–अपने अनुभव साझा कर रहे थे, तभी वैभव (मेरा बेटा) बोला बस मेरा स्नोमैन ही नहीं बना। मैं मन ही मन सोचने लगी कि यह, यही एक इच्छा लेकर यहां घूमने आया था जो कि पूरी नहीं हो पाई। मैंने वैभव से कहा बेटा चलो भगवान से प्रार्थना करते हैं कि स्नोफॉल हो जाए और आप अपना स्नोमैन बना सको।

इसके बाद हम सब रात का खाना खाने अंदर गए। अभी 10 ही मिनट हुए थे कि अचानक आवाज आई कि स्नोफॉल हो रहा है, हमें यकीन नहीं हो रहा था क्योंकि अभी थोड़ी देर पहले हम सब बाहर ही बैठे थे। हमने जल्दी –जल्दी अपना खाना खत्म किया और बाहर आए.... सचमुच यह स्नोफॉल ही था। वैभव खुशी से झूम रहा था.... भगवान को थैंक यू कह रहा था।

प्रकृति की गोद में बैठकर उस समय स्नोफॉल का आनंद एक स्वप्न सा लग रहा था। 2–3 डिग्री सेल्सियस में, एक ओर बच्चे स्नोमैन बना रहे थे दूसरी ओर कुछ लोग एक दूसरे पर बर्फ के गोले फेंक रहे थे। यह निश्चय ही अतुलनीय...अकल्पनीय...अनुभव था।

सुबह उठकर खिड़की खोली तो प्रकृति का श्रृंगार देखकर बहुत सुखद अनुभव हुआ क्योंकि पहले दिन जब खिड़की खोली थी, तो प्रकृति हरियाली की चुनरी ओढ़े खड़ी थी और आज चमचमाती सफेद सितारों से भरे आंचल को लहरा रही थी। मैं मुस्कुरा रही थी, तभी अचानक ख्याल आया आज तो हमें जाना है पर जाएंगे कैसे?... होटल के कर्मचारी ने बताया कि अभी रास्ता साफ होने में कम से कम 4 से 5 घंटे लगेंगे। बाहर निकल कर देखा तो रात भर इतनी बर्फबारी हुई थी कि ऐसा लग रहा है कि हम किसी ग्लेशियर में आ गए हैं जहां तक नजर जा रही थी बस सफेद ही सफेद। हमारी गाड़ी भी तो सफेद चादर ओढ़े खड़ी थी। वैभव और उसके मित्रों की खुशी देखकर ऐसा लग रहा था कि हमारा यहां आना कितना अधिक सफल रहा।

दोबारा बर्फबारी शुरू होने से पहले हमें वहां से निकलना था। गाड़ी जैसे ही चली बर्फ़ फिसलने लगी। हम सब तो घबरा गए, लेकिन यहां मेरे पति का वर्षों का अनुभव, तत्परता और सूझबूझ काम आयी। और हम वहां से सब कुशलपूर्वक शिमला तक आ गए।

मित्रों यह प्रकृति का चमत्कार ही था कि जिस फागू में मौसम विभाग ने अगले 2 दिनों तक साफ मौसम की भविष्यवाणी की थी, उसी फागू में उस रात दो–दो फीट तक बर्फ गिरी।

OUR NATIONAL FLAG

GEETA CHAUDHARY
AT, UPS HAZRATPUR
KHURJA

Our National Flag is the symbol of the land and people of India. It is a tricolour pannel made up of three rectangular panels or sub-panels of equal width. The colour of the top panel is India saffron (Kesaria) and that of the bottom is India green. The middle panel is white, bearing at its centre the design of the Ashok Chakra in navy blue colour with 24 equally spaced spokes. The Ashok Chakra is visible on both sides of the flag in the centre of the white panel. The Flag is rectangular in shape with the ratio of the length to the height (width) being 3:2.

Dr. S. Radhakrishnan explained about the National Flag in the Constituent Assembly which adopted it, "Bhagwa or the saffron colour denotes renunciation or disinterestedness. The white in the centre is light, the path of truth to guide our conduct. The green shows our relation to the soil, our relation to the plant life here on which all other life depends. The Ashoka Wheel is the wheel of the law of Dharma. Truth or satya, Dharma or virtue thought to be the controlling principles of those who works under the flag. Again, the wheel denotes motion. There is life in movement. India must move and go forward."

If done properly, there is no restriction on the display of the National Flag by common people, private organisations or educational institutions. Consistent with the dignity and honour of the flag as detailed in the flag code of India, anyone may hoist /display the National Flag on all days and occasions, ceremonial or otherwise.

Where the practice is to fly on any public building, it must be flown on the building on all days including Sundays and holidays and, except as provided in the code, it shall be flown from sunrise to sunset irrespective of weather conditions. The Flag may be flown on such a building at night also but this should be only on very special occasions.

जागृति
एक पहल
वर्ष1 II प्रथम अंक II 2021

शिक्षा का बदलता स्वरूप

कर्मवीर सिंह
प्राथमिक विद्यालय बीहरा नं0 1
अगौता

वर्ष 2020 में संसार के सभी देश कोरोना नामक महामारी से बहुत प्रभावित रहे इसके चलते सभी देशों को लॉकडाउन लगाना पड़ा जिसके कारण हमारे देश मे भी सभी विद्यालय बंद कर दिए गए परन्तु हमारे अध्यापकों ने इस महामारी को नयी चुनौती के रूप में स्वीकार करके विद्यालय में पढ़ रहे बच्चों के लिए नए नए तरीकों को इजात करके शिक्षा के स्वरूप को ही बदल दिया। कल तक जो बच्चे बैग और बस्तों के साथ विद्यालय जाया करते थे वो आज बड़ी तन्मयता के साथ अपने घरों में पढ़ाई कर रहे हैं। लॉकडाउन के शुरुआती दौर में लूडो, शतरंज व कैरम बोर्ड के अलावा मोबाइल पर गेम व टेलीविजन देख मन बहलाने वाले बच्चे अब ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था होने से पूरा दिन पढ़ रहे हैं। वे घर बैठे ही टेस्ट देने के साथ अपनी उपस्थिति भी ऑनलाइन दर्ज करा रहे हैं। शिक्षा विभाग की ओर से दूरदर्शन पर उपलब्ध कराई जा रही शिक्षण सामग्री से फिलहाल जिले के 2500 प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालय के पहली से आठ कक्षा कर 1लाख 26 हजार से अधिक छात्र–छात्राएं लाभ ले रहे हैं। इसके अलावा केंद्रीय विद्यालय व कई अन्य निजी स्कूलों में 50 हजार से अधिक छात्रों की ऑनलाइन पढ़ाई के साथ उनकी उपस्थिति भी दर्ज कराई जा रही है।जब विभिन्न विद्यालय के बच्चों से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि भले ही ऑनलाइन के माध्यम से कोर्स पूरा कराया जा रहा है परन्तु उन्हें लग ही नही रहा की वे स्कूल से दूर है। अक्सर इलेक्ट्रोनिक गैजेट्स से दूर रहने वाले शिक्षकों ने भी व्हाट्सएप ग्रुप के द्वारा अधिक से अधिक बच्चो को शिक्षण सामग्री पहुचाई और दीक्षा एप और रीड एलॉगं एप के माध्यम से भी पढ़ाई करायी। विभिन्न शिक्षकों ने जूम एप और गूगल मीट के द्वारा शिक्षा को नया स्वरूप प्रदान किया है शिक्षकों ने मोहल्ला क्लास के माध्यम से ऑनलाइन ही बच्चों को शिक्षा देने के साथ साथ गूगल फॉर्म के माध्यम से परीक्षा के नए तरीकों का प्रयोग किया जा रहा हैं।

शासन द्वारा भी मिशन प्रेरणा के अंतर्गत कक्षा 1 से 8 तक प्रत्येक सप्ताह ई–पाठशाला कार्यक्रम के द्वारा भी बच्चों के लिये शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई गई है जो कि शिक्षक घर घर जा कर और दूरभाष के द्वारा बच्चों और अभिभावकों से साझा कर रहे है। इन्हीं छोटे छोटे प्रयासों से शिक्षकों ने इस बदलते दौर में शिक्षा के स्वरूप को बदलने की एक छोटी से कोशिश की है जो एक दिन जरूर कामयाब होगी।

नवाचार - गणित की संक्रियाएं

श्रीमती नीतू गौतम
सहायक अध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय मंडावरा
सिकन्द्राबाद

मैं नीतू गौतम (स०अ० – प्राथमिक विद्यालय मंडावरा) ने एक नवाचार के माध्यम से बच्चों को गणित की संक्रियाएं जैसे जोड़,घटाव,गुणा और भाग सिखाने का प्रयास किया है। इस को सिखाने के लिए एक मॉडल तैयार किया गया है और कक्षा के सामने जमीन पर पूरा खेल बनाया है ।

आओ अब हम खेल–खेल में गणित सीखने की शुरुआत करते हैं।

- खेल में 7 प्रतिभागी हिस्सा लेंगे 4 प्रतिभागी प्रश्न पूछेंगे एवं तीन प्रतिभागी उत्तर बताएंगे।
- प्रश्न बताने वाला प्रतिभागियों में से एक, पहले स्तंभ की किसी भी एक संख्या पर खड़ा हो जाएगा।
- दूसरा प्रतिभागी दूसरे स्तंभ की किसी भी एक संख्या पर खड़ा हो जाएगा।
- तीसरा प्रतिभागी पासा फेंकेगा, जिस पर जोड़, घटाव ,गुणा और भाग के चिन्ह बने हैं ।
- चौथा प्रतिभागी तीसरे स्थान पर खड़ा हो जाएगा।
- 3 प्रतिभागी जो उत्तर बताएंगे वह पासे में आए चिन्ह के हिसाब से गणना करेंगे एवं इकाई, दहाई सैकड़ा के क्रम अनुसार उत्तर के तीनों स्तंभों पर खड़े होंगे।
- स्तंभ पर खड़े प्रतिभागियों का नंबर पूछे गए प्रश्न का उत्तर होगा।

इस तरह बच्चों में खेल के माध्यम से हम रुचि उत्पन्न करके उन्हें गणित सीखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

विद्यालयों का बदलता स्वरूप

प्राथमिक विद्यालय बीहरा नं०१ अगौता

विद्यालयों का बदलता स्वरूप

प्राथमिक विद्यालय बीहरा नं०१ अगौता

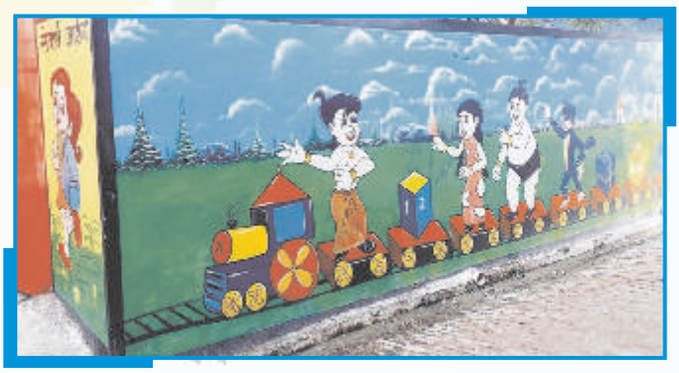

पोषण टोकरी

रिंकू
उ0प्रा0वि0 नंगला सारंगपुर
वि0ख0 पहासू

उद्देश्यः–

बच्चों को कुपोषण से मुक्ति दिलाकर स्वस्थ बनाना

कार्यविधिः–

कुछ विशेष बच्चों को जो अक्सर बीमारी के कारण विद्यालय से अनुपस्थित रहते, एवं विद्यालय आने पर भी शीघ्र थक जाने वाले, पढ़ाई में मन ना लगना आदि कारणों के सामने आने पर कारणों का पता लगाया जिसमें मुख्य बिन्दु यह पाया गया कि बच्चे गरीबी के कारण पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व नहीं ले पा रहे हैं एवं कुपोषण का शिकार हो रहे हैं। यह जानकर मन द्रवित हो गया और तुरन्त निर्णय लेकर पोषण टोकरी कार्यक्रम प्रारम्भ किया जिसमें प्रत्येक दिन बच्चों को प्रार्थना सभा के तुरन्त बाद ताजे फल; अनार, सेब, अमरुद आदि की व्यवस्था की। कार्यक्रम दिनांक 20 जौलाई 2019 को प्रारम्भ करके कोरोना काल में विद्यालय बन्द होने से पूर्व तक निरन्तर चलाया गया।

परिणामः–

कार्यक्रम के फलस्वरुप बहुत ही सुखद परिणाम मिले। बच्चे कुपोषण से मुक्त हुए, शैक्षिक एवं शारीरिक गतिविधियों में उत्साह से सक्रिय हुए। बच्चों के अभिभावक भी बच्चों के प्रति शिक्षकों के लगाव व समर्पण से अभिभूत हुए। कई अभिभावकों ने विद्यालय आकर धन्यवाद दिया। बच्चों की उपस्थिति में आशातीत वृद्धि भी हुई।

किताबें

श्रीमती शिखा हुक्कू
सहायक अध्यापिका
उच्च प्राथमिक विद्यालय (1–8) तिल बेगमपुर
सिकंदराबाद

जीवन की मुस्कान किताबें,
बहुत बड़ा वरदान किताबें,

गूँगे का मुँह बनकर बोलें,
बहरे की हैं कान किताबें ।

हीरे– मोती से भी बढ़कर,
बेशकीमती खान किताबें

अच्छा क्या है? क्या है बुरा?
करती हैं पहचान किताबें ।

जीवन की हर मुश्किल को ये,
कर देती आसान किताबें ।

इस धरती के सबसे ऊपर,
सबसे बड़ा वरदान किताबें ।
कभी नहीं ये बूढ़ी होतीं
रहती सदा जवान किताबें ।

"पूछा है मेरी बेटी ने"

श्रीमती शिखा त्यागी
सहायक अध्यापिका
उच्च प्राथमिक विद्यालय गोविला
खुर्जा

नाम रोशन करने को बेटा ही क्यों हो?
बेटी भी तो शीश ऊंचा उठा सकती है।

वंश बढ़ाने को बेटा ही क्यों हो?
बेटी भी तो पिता का नाम चला सकती है।

बुढ़ापे का सहारा बेटा ही क्यों हो?
बेटी भी तो सेवा कर सकती है।

जिम्मेदारी उठाने को बेटा ही क्यों हो?
बेटी भी तो ये फ़र्ज़ निभा सकती है।

फिर क्यों फ़र्क हो दोनों के होने में?
कोई बताओ!! पूछा है ये मेरी बेटी ने।

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

करें योग, रहें निरोग

शिल्पी गोयल
सहायक अध्यापिका
उच्च प्राथमिक विद्यालय
निजामपुर सिकंद्राबाद

योग मुद्रा एक प्राचीन कला है जिसका अभ्यास हम प्राणायाम और मेडिटेशन के दौरान करते हैं। प्राचीन काल में साधु , संत शरीर के अंदर मौजूद पंच तत्व हवा, पानी, अग्नि, पृथ्वी और आकाश को संतुलित रखने के लिए योग मुद्राएं करते थे।प्रत्येक तत्वों का शरीर के अंदर एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण कार्य होता है। हाथ की पांच अंगुलियों में प्रत्येक अंगुली किसी न किसी तत्व का प्रतिनिधित्व करती है। वायु तर्जनी अंगुली पर , जल अंतिम छोटी उंगली पर और आकाश तत्व मध्यमा अंगुली पर स्थित होता है। अंगूठा अग्नि तत्व को दर्शाता है। छोटी अंगुली के बराबर की उंगली पृथ्वी तत्व को दर्शाती है।

विभिन्न मुद्राएं

1. **ज्ञान मुद्रा** :– अपने हाथ की तर्जनी अंगुली व अंगूठे को मिलाने से जो मुद्रा बनती है उसे ज्ञान मुद्रा कहते हैं।

   लाभ – इस मुद्रा को करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है, अनिद्रा व क्रोध दूर होता है।

2. **वायु मुद्रा** :– अपने हाथ की तर्जनी अंगुली व अंगूठे को मोड़कर अंगूठे की जड़ (मूल) में लगाने से जो मुद्रा बनती है उसे वायु मुद्रा कहते हैं।

   लाभ – इस मुद्रा को लगाने से वायु विकार , साईटिका , गठिया , लकवा व जोड़ों का दर्द आदि वात रोग ठीक होते हैं।

3. **आकाश मुद्रा** :– अपने हाथ की मध्यमा अंगुली को अंगूठे के अग्रभाग से लगाने पर जो मुद्रा बनती है उसे आकाश मुद्रा कहते हैं।लाभ – इस मुद्रा को लगाने से मन को शांति मिलती है व हड्डियों की कमजोरी दूर होती है।

4. **शून्य मुद्रा** :– अपने हाथ की मध्यमा अंगुली को अंगूठे के जड़ (मूल) में लगाकर अंगूठे से धीरे से दबाने से जो मुद्रा बनती है उसे शून्य मुद्रा कहते हैं।लाभ – इस मुद्रा को लगाने से कान के सभी रोग दूर होते हैं। गले के रोग एवं थायराइड रोग में भी लाभ होता है।

5. **पृथ्वी मुद्रा** :– अपने हाथ की अनामिका अंगुली को अंगूठे से मिलाने पर जो मुद्रा बनती है उसे पृथ्वी मुद्रा कहते हैं।

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से दुबलापन दूर होता है व शरीर में स्फूर्ति आती है। शरीर में क्रांति एवं तेजस्विता में वृद्धि होती है और इससे वजन भी बढ़ता है।

6. **सूर्य मुद्रा** :– अपने हाथ की अनामिका अंगुली को अंगूठे के जड़ (मूल) में लगाकर अंगूठे से धीरे से दबाने से जो मुद्रा बनती है उसे सूर्य मुद्रा कहते हैं।

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से मोटापा तेजी से घटता है , थायराइड में भी फायदा होता है व पाचन क्रिया सही रहती है।

7. **वरुण मुद्रा** :– अपने हाथ की कनिष्का अंगुली को अंगूठे से मिलाने पर जो मुद्रा बनती है उसे वरुण मुद्रा कहते हैं।

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से शरीर में जल की कमी दूर होती है , त्वचा का रूखापन नष्ट होता है , त्वचा चमकीली व मुलायम होती है व चर्म रोग दूर होता है।

8. **जलोदर नाशक मुद्रा** :– अपने हाथ की कनिष्का अंगुली को अंगूठे के जड़ (मूल) में लगाकर अंगूठे से धीरे से दबाने से जो मुद्रा बनती है उसे जलोदर नाशक मुद्रा कहते हैं।

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से पेट में पानी भर जाना व शरीर की सूजन ठीक होती है।

9. **सहजशंख मुद्रा** :– अपने दोनों हाथों की अंगुलियों को आपस में फंसाकर हथेलियां दबाकर तथा दोनों अंगूठों को बराबर सटाकर रखने से जो मुद्रा बनती है उसे सहजशंख मुद्रा कहते हैं।

लाभ– इस मुद्रा को लगाने से हकलाना व तुतलाना बन्द होता है और आवाज़ मधुर होती है।

10. **शंख मुद्रा** :– अपने हाथ के बाएं अंगूठे को दाएं हाथ की मुट्ठी से पकड़कर बाएं हाथ की तर्जनी अंगुली को दाएं हाथ के अंगूठे के अग्रभाग पर लगा दे। बाएं हाथ की अन्य अंगुलियों से दाएं हाथ की अंगुलियों को हल्का दबा देने से जो मुद्रा बनती है, उसे शंख मुद्रा कहते हैं।

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से थायराइड ग्रंथि ठीक काम करती है व आवाज़ मधुर होती है।

11. **प्राण मुद्रा** :– अपने हाथ की कनिष्ठा व अनामिका अंगुलियों को अंगूठे से स्पर्श कराने पर जो मुद्रा बनती है उसे प्राण मुद्रा कहते हैं।

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं प्राण शक्ति बढ़ती है और आत्मविश्वास जागता है। नेत्र रोग में भी लाभ मिलता है।

12. **अपान मुद्रा** :– अपने हाथ की मध्यमा व अनामिका अंगुलियों को दोनों को आपस में मिलाकर उनके शीर्षों को अंगूठे के शीर्ष से स्पर्श कराएं बाकी दोनों अंगुलियों को सीधा रखने पर जो मुद्रा बनती है उसे अपान मुद्रा कहते हैं।

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से शरीर के विषाक्त पदार्थों को बाहर करने में मदद मिलती है और मधुमेह , कब्ज व पेट संबंधी समस्याएं दूर होती है।

13. **अपान वायु मुद्रा** :– अपने हाथ के अंगूठे के पास वाली तर्जनी अंगुली को अंगूठे के जड़ (मूल) में लगाकर मध्यमा व अनामिका को मिलाकर उनके शीर्ष भाग को अंगूठे के शीर्ष भाग से स्पर्श कराएं व कनिष्ठा अंगुली को अलग से सीधा रखने पर जो मुद्रा बनती है उसे अपान वायु मुद्रा कहते हैं।

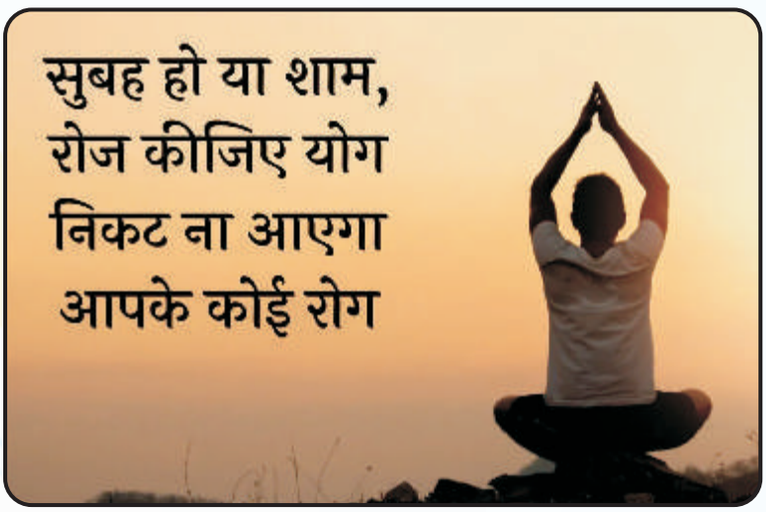

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से हृदय रोग में लाभ मिलता है।पेट की गैस व शरीर की बैचेनी भी दूर होती है।

14. **आदित्य मुद्रा** :– अपने हाथ के अंगूठे के अग्र भाग को अनामिका की जड़ (मूल) में लगाएं व शेष अंगुलियों को सीधा व मिलाकर रखने से जो मुद्रा बनती है उसे आदित्य मुद्रा कहते हैं।

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से छींक व उबासी में लाभ मिलता है।

15. **ध्यान मुद्रा** :– अपने बाएं हाथ की हथेली पर दाएं हाथ की हथेली रखें और कमर सीधी व आंख बन्द रखने पर जो मुद्रा बनती है उसे ध्यान मुद्रा कहते हैं।

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से ओज व एकाग्रता में वृद्धि होती है। ध्यान की उच्चतर स्थिति तक पहुंचने में सहायक सिद्ध होती है।

मिशन प्रेरणा उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

शिक्षा के नए आयाम

श्रीमती भारती मांगलिक (इं0प्र0अ0)
पू0मा0वि0 औरंगाबाद
वि0क्षे0 लखावटी
बुलन्दशहर

बिटिया को दो विद्या का दान
सबसे बढ़िया ये कन्यादान
नई परिपाटी पे बढ़ते जाओ
निर्भया को सबल बनाओ।

हर सिक्के के दो है पहलू
पहले अपनी बात तो कहलूं
कोरोना ने बिगाड़ी शिक्षा व्यवस्था
रोया मेरा मन देख ये अवस्था।

ऐसे में उठाए गए कुछ नए कदम
मिशन प्रेरणा, दीक्षा, रीड एलॉग ने लहराए अपने परचम
E-पाठशाला के देखे नए आयाम
आईसीटी और ऑनलाइन टीचिंग ने करा दिए खूब व्यायाम

नित नए नवाचारों में शिक्षकों ने फूंक दिए प्राण
ताकि शिक्षा व शिक्षक का बना रहे सम्मान
शिक्षा जगत में हो वे नितनवीन चेतना का संचार
आओ खाएं ये शपथ हम कभी ना माने हार।

शिक्षक और समाज

श्री अब्दुल रउफ
उ0प्रा0वि0 फतेहपुर
वि0ख0 अगौता

आज विचार विमर्श का विषय शिक्षक और समाज है। शिक्षक और समाज यह विषय कोई नया विषय नहीं है। मेरे विचार से मानव सभ्यता के आरंभ से ही शिक्षक समाज का आवश्यक अंग है और हमेशा रहेगा समाज के निर्माण एवं संस्कार में शिक्षक का बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा है इतिहास साक्षी है जिस समाज को योग्य एवं श्रेष्ठ शिक्षक प्राप्त हुए हैं वहीं समाज प्रगतिशील एवं उन्नत रहा है वर्तमान युग में भी यह बात शत प्रतिशत सत्य हैं। एक शिक्षक समाज रूपी रथ को एक सही डगर पर ले जाने वाला सारथी होता है। यदि किसी रथ का सारथी अनुभवहीन, अकुशल, और अल्पज्ञ होगा तो उस रथ के विनाश में कोई संदेह नहीं। इसी प्रकार समाज को उन्नत बनाने में एक शिक्षक का पूरा पूरा हाथ होता है एक शिक्षक देश एवं समाज के भावी उत्तराधिकारी छात्रों के भविष्य का निर्माता होता है। बालक तो कच्ची मिट्टी के समान होता है, जिससे भगवान के रूप में भी ढाला जा सकता है और दैत्तय के रूप में भी। एक शिक्षक उसे सच्चरित्र बनाकर उसके अंदर अच्छे संस्कार उत्पन्न कर सकता है इस प्रकार एक भावी समाज की अस्ती–नास्ति एक शिक्षक पर निर्भर करती है।

इस उत्तरदायित्वों को निभाने हेतु एक शिक्षक का ये परम धर्म हो जाता है कि जो संस्कार वह छात्रों को देना चाहता है तो पहले स्वयं अपने अंदर उत्पन्न करे। क्योंकि जिसकी दुकान में जो सौदा होगा वही ग्राहकों को वही सौदा तो देगा, यदि एक शिक्षक स्वयं मद्यपान एवं धूम्रपान करता है, चोरी डकैती व्याभिचार करता है या उसमें कोई अन्य अवगुण तो छात्रों को उससे किसी सद्गुण प्राप्ति की अपेक्षा व्यर्थ है। वह तो समाज के लिए नासूर है। वह शिक्षक समाज पर कलंक है वह तो साक्षात पिशाच है। जिसे समाज से जुड़े रहने का कोई अधिकार नहीं।

शिक्षण कार्य अत्यधिक महान एवं सम्मान जनक कार्य हैं। प्राचीन काल में राजा महाराजा भी एक शिक्षक का आदर सत्कार करते थे, और आज भी बड़े बड़े अधिकारी एवं मंत्री भी शिक्षक का आदर करते हैं परंतु कुछ शिक्षकों ने शिक्षक नाम को कलंकित कर दिया है। मैं मानता हूँ कि इस प्रकार के शिक्षक बहुत अल्प संख्या में है। परन्तु आप सब जानते हैं कि एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है। इस प्रकार कुछ ऐसे शिक्षक ने सारे शिक्षक वर्ग को बदनाम कर दिया है।

समाज का अंग होने के कारण इस अर्थवादी युग में एक शिक्षक भी धन के पीछे भाग रहा है और उसका धन के पीछे भागना स्वाभाविक है और उचित तथा अनुचित रूप से धन अर्जित करने में लगा हुआ है। परंतु एक आदर्श शिक्षक को यह शोभा नही देता, कुछ लोगों का तर्क है इस भौतिक युग में धन ही सब कुछ है। इस समाज में रहकर एक शिक्षक को भी रहने के लिए मकान, खाने के लिए भोजन, पहनने के लिए वस्त्र और बच्चों की शादी ब्याह के लिए धन की आवश्यकता होती है और इन आवश्यकताओं की पूर्ती लिए वह अनुचित रूप से भी धन अर्जित करने का प्रयत्न करता है किन्तु उनका यह तर्क उचित नहीं है। मैं मानता हूँ कि इन सामाजिक मूल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन की आवश्यकता होती है किन्तु इसका अर्थ यह नही है कि वह अपने कर्तव्य को भूल कर अनुचित रूप से धन अर्जित करें।

उसके आर्थिक संकट को दूर करने का दायित्व आज समाज और सरकार का कार्य है सरकार को चाहिए कि वह उसे भरपेट भोजन दे। जब एक शिक्षक को उसकी आवश्यकतानुसार वेतन प्राप्त होगा तो वह अनुचित रूप से धन अर्जित क्यों करेगा, बल्कि तब वह अपने कर्तव्य का पूर्ण निर्वाह करेगा।

अतः एक और यदि समाज के प्रति शिक्षक का कर्तव्य है तो दूसरी और शिक्षक के प्रति समाज का भी कर्तव्य है कि वह उसकी आवश्यकताओं की पूर्ती का ध्यान रखें। अतः मेरे विचार से शिक्षक और समाज दोनों एक दूसरे के पूरक हैं एक के बिना दूसरे का अस्तित्व अधूरा है इन्हीं विचारों के साथ मैं आपसे विदा चाहता हूँ धन्यवाद।

मेरा प्यारा प्राइमरी स्कूल

श्रीमती सुनीता सोलंकी प्र०अ०
प्र०वि०नौसाना
वि०–क्षे० बुलंदशहर

मेरा प्यारा प्राइमरी स्कूल,
कैसे जाऊँ तुमको भूल,
तुमने हमको महान बनाया,
सत्य अहिंसा का पाठ पढ़ाया,
हम सबका भाग्य सवांरा,

हम उपवन हैं तुम हो माली,
तेरी तो शान निराली
सच्ची राह दिखाने वाले,
ज्ञान से हरले सबकी भूल,
मेरा प्यारा प्राइमरी स्कूल।

ऊँचे–ऊँचे काम करे हम,
जग में तेरा नाम करे हम,
कभी करें नही बुरे काम हम,
महके जग में बनकर फूल,
मेरा प्यारा प्राइमरी स्कूल।

विद्यालयों का बदलता स्वरूप

प्राथमिक विद्यालय
दारापुर
विकास खण्ड पहासू
जनपद बुलन्दशहर

विद्यालयों का बदलता स्वरूप

प्राथमिक विद्यालय
दारापुर
विकास खण्ड पहासू
जनपद बुलन्दशहर

विद्यालय में नवीन नामांकन

श्रीमती पिंकी वर्मा
(सहायक अध्यापिका)
उच्च प्राथमिक विद्यालय सबदलपुर
वि.क्षे. – बुलन्दशहर

'जब हौसला बना लिया हमने, ऊंची उड़ान का,
फिजूल है कद, देखना आसमान का.....!!!!!
सभी साथियों को मेरा नमस्कार,

मैं पिंकी वर्मा, उच्च प्राथमिक विद्यालय सबदलपुर, विकास क्षेत्र बुलन्दशहर में गणित विषय की सहायक अध्यापिका के पद पर कार्यरत हूँ तथा वर्तमान में शिक्षक संकुल के उत्तरदायित्व का निर्वहन भी कर रही हूँ ..

मेरा विद्यालय मुझे बहुत प्रिय है , मेरे विद्यालय में कुल 5 अध्यापक कार्यरत हैं तथा वर्तमान में मेरे विद्यालय में छात्र नामांकन 110 है तथा अगस्त 2019 को इस विद्यालय का उच्च प्राथमिक विद्यालय सबदलपुर में संविलियन हो गया है ।

मेरे विद्यालय के सभी अध्यापक / अध्यापिकायें कर्मठ व परिश्रमी हैं..

3 अक्टूबर सन 2015 को मैंने विद्यालय में गणित विषय की सहायक अध्यापिका के पद पर कार्यभार ग्रहण किया तथा तब से ही विद्यालय में मैने कुछ नवीन कार्य करने तथा नवीन नामांकन हेतु बहुत प्रयत्न किए। इस कार्य में सफलता भी प्राप्त की, जिसमें कि समस्त स्टाफ का सहयोग भी मुझे प्राप्त हुआ।

मेरे द्वारा विद्यालय में नवीन नामांकन बढ़ाने के प्रयासों में कुछ प्रयास बच्चों की रुचि विद्यालय आने में बढ़ाने की दिशा में भी किए गए, जिस क्रम में विद्यालय की कक्षाओं को आकर्षक बनाने हेतु वॉल पेंटिंग, चार्ट व विभिन्न TLM द्वारा कक्षाओं को तैयार किया गया व बच्चों के लिए प्रिंटरिच वातावरण तैयार किया गया।

विद्यालय में मेरे द्वारा बच्चों को योगाभ्यास खेल कार्यक्रम भी समय–समय पर कराए गए जिसमें कि सभी बच्चों द्वारा एक साथ प्रतिभाग किया गया व बच्चे विद्यालय आने को उत्साहित हुए।

मेरे द्वारा बच्चों के लिए रोचक व ज्ञानवर्धक गतिविधियां भी तैयार की गई जैसे कि मेरे द्वारा तैयार एक गतिविधि' आओ खेलें खेल सीखें ज्ञान और बढ़ाएं मान' तैयार की गई जिसमें की बच्चों ने उत्साह पूर्वक प्रतिभाग किया व ज्ञान वृद्धि भी की।

इसी क्रम में विभिन्न अवसरों पर मेरे द्वारा बच्चों को विभिन्न कार्यक्रम जैसे नृत्य, कविता पाठ, कहानी वाचन आदि कार्यक्रम भी कराए गए।

इस प्रकार मेरे विद्यालय के बच्चों में विभिन्न बौद्धिक क्षमताओं व शारीरिक क्षमताओं का विकास हुआ व विद्यालय के प्रति रुचि उत्पन्न हुई।

TLM-घड़ी का वर्किंग मॉडल

श्रीमती सीमा रानी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय (1–8) दरियापुर
बुलन्दशहर

यह एक घड़ी का वर्किंग मॉडल है। जिसे मेरे द्वारा घर की बेकार वस्तुओं जैसे लकड़ी की चम्मचें, गत्ता, कागज एवं खराब पड़ी घड़ी के समान से तैयार किया गया है, जिसके द्वारा बच्चों को बहुत कुछ सिखाया जा सकता है। यह मॉडल प्राथमिक व उच्च प्राथमिक दोनों कक्षाओं हेतु उपयोगी है।

इसके द्वारा बच्चों को निम्नलिखित लर्निंग आउटकम की प्राप्ति करायी जा सकती है:–

1) इसके द्वारा बच्चों को अलग–अलग रंगों का ज्ञान कराया जा सकता है।

2) बच्चों को विभिन्न आकार जैसे वर्ग, आयत, वृत्त आदि आकृतियों के बारे में बताया जा सकता है।

3) बच्चों को समय देखना सिखाया जा सकता है।

4) छात्र–छात्राओं को घंटा ,मिनट एवं सेकेंड के संबंध के विषय में समझा सकते हैं।

5) घड़ी की सुईयों द्वारा विभिन्न कोणों जैसे सम कोण, अधिक कोण, न्यून कोण आदि का ज्ञान कराया जा सकता है।

6) बच्चों को समय के महत्व के प्रति भी जागरूक किया जा सकता है।

अनमोल वचन

श्रीमती विनीता रानी
सहायक अध्यापिका
उच्च प्राथमिक विद्यालय दरियापुर

स्वामी विवेकानंद हमारे देश के बहुत ही महान समाज सेवी थे। उनका जन्म कलकत्ता के एक कुलीन कायस्थ परिवार में हुआ था। वे अपने गुरु रामकृष्ण देव से काफी प्रभावित थे। उनका जन्म 12 जनवरी को हुआ था। उनका नाम बचपन में विश्वेश्वर रखा गया था किन्तु उनका औपचारिक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। उनके पिता विश्वनाथ दत्त ,कलकत्ता हाईकोर्ट के एक प्रसिद्ध वकील थे। उनकी माता भुवनेश्वरी देवी धार्मिक विचारों की महिला थी। उन्होंने अपने परिवार को केवल 25 साल की उम्र में छोड़ दिया था। उन्होंने ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के मेट्रोपोलिटन संस्थान में दाखिला लिया जहाँ वे स्कूल गए। उनकी वेद, उपनिषद, गीता, रामायण में गहन रूचि थी। स्वामी विवेकानंद अपने उन्तालीस वर्ष के जीवन काल में जो काम कर गए वे आने वाली अनेक शताब्दियों तक पीढियों का मार्गदर्शन करते रहेंगे। वे केवल संत ही नहीं एक महान देशभक्त, वक्ता, विचारक, लेखक और मानव प्रेमी थे। उन्होंने पुरोहितवाद, ब्राह्मणवाद, धार्मिक कर्मकांड और रुढियों की भी खिल्ली उड़ाई और लगभग आक्रमणकारी भाषा में ऐसी विसंगतियों के खिलाफ भी युद्ध किया। आखिर में स्वामी जी के कुछ अनमोल वचन।

उठो जागो और तब तक नहीं रुको
जब तक लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाता।

एक समय में एक काम करो और
ऐसा करते समय अपनी
पूरी आत्मा डाल दो और
बाकि सब कुछ भूल जाओ।

पहले हर अच्छी बात का मजाक बनता है
फिर विरोध होता है
और फिर उसे स्वीकार कर लिया जाता है।

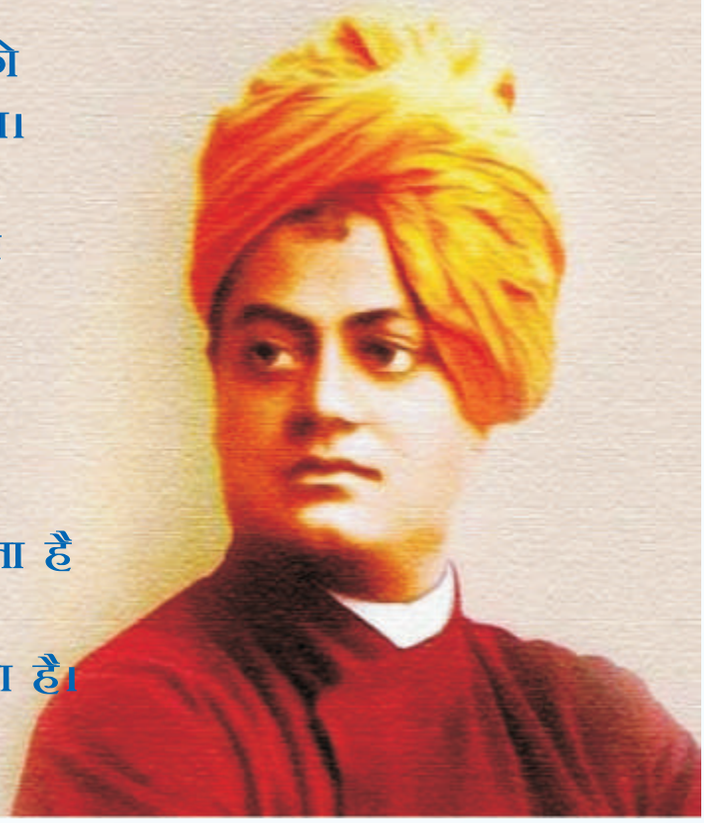

इसी के साथ मैं अपने लेख को विराम देती हूँ।

धन्यवाद

मेरी कल्पना

श्रीमती स्वाति शर्मा
सहायक अध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय मडैया कलां, ऊँचागाँव

विद्यालय मेरा कैसा हो ?
एक सुंदर उपवन जैसा हो।
जहाँ कच्ची कोमल कलियाँ खिलें,
सींचने को उन्हें सही माली मिले।

फिर खिल उठ महक बिखेर दें,
जीवन में सबके खुशियाँ भर दें।
महक से उनकी सारा समाज सुगन्धित हो,
ऐसे उपवन सदृश्य विद्यालय के लिए
हम सब गठबंधित हों।

विद्यालय मेरा कैसा हो ?
बिल्कुल मेरे घर जैसा हो।
जो भौतिक संसाधनों से परिपूर्ण हो,
बच्चों की शिक्षा के अनुकूल हो।
जिसे बच्चे अपना घर सा समझें,
मंदिर की तरह उसको पूजें।

शिक्षकों को माँ–बाप सा सम्मान दें,
शिक्षक भी बच्चों को उतना ही प्यार दें।
जिससे भयमुक्त हो जाये वातावरण,
और मन लगाकर बच्चे करें अनुसरण।
तो ऐसा मेरा विद्यालय हो,
जो बिल्कुल परिवार जैसा हो।

विद्यालय मेरा कैसा हो ?
प्राचीन गुरुकुल जैसा हो।
जहाँ शिक्षक सदाचारी हों,
और बच्चे भी आज्ञाकारी हों।
सीख जाएँ वे मेहनत करना,
अपने बल कुछ हासिल करना।

जहाँ प्रकृति से प्रेम करना सिखाया जाए,
देश सेवा हेतु तत्पर बनाया जाए।
जो पढ़–लिखकर देश का गौरव बढ़ाएं,
और सबके लिए एक मिसाल बन जाएँ।

तो मेरा विद्यालय कैसा हो ?
एक मजबूत आधार स्तंभ जैसा हो।

टी एल एम - उपसर्ग

श्रीमती नीतू कात्याल (प्र०अ०)
प्रा०वि० भाईपुरा
वि०क्षे० बुलन्दशहर

मैं नीतू कात्याल सहायक अध्यापक पूर्व माध्यमिक विद्यालय (1–8) भाईपुरा ब्लॉक बुलन्दशहर से आज आपको उपसर्ग की अवधारणा स्पष्ट करूँगी, उपसर्ग क्या होते हैं?, इसके विषय में हम जानेंगे और मेरे द्वारा बनाए गए इस TLM के माध्यम से इसका अभ्यास भी करेंगे। तो बच्चों पहले उपसर्ग का क्या अर्थ होता है उसको जानेंगे उपसर्ग शब्द 2 शब्दों से मिलकर बना है उप +सर्ग उप का अर्थ है समीप और सर्ग का अर्थ है सृष्टि तो इसलिए उपसर्ग का अर्थ होता है किसी शब्द के समीप आकर नया शब्द बनाना। इनकी तीन विशेष बातें हैं कि यह शब्दांश होते हैं और शब्द से पहले लगते हैं तथा मूल शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं इसलिए हम कह सकते हैं जब कोई शब्दांश किसी शब्द के पहले लग कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाता है तो उसे उपसर्ग कहते हैं। इसे हम इस टी एल एम के माध्यम से और अच्छी तरह से समझेंगे जैसे अ का अर्थ होता है बिना और हम इसे अगर ज्ञान मूल शब्द में जोड़ें तो हमारा नया शब्द बनेगा अज्ञान। ज्ञान का मतलब होता है समझ और अज्ञान का मतलब हो गया बिना समझ का इस प्रकार ज्ञान शब्द का अर्थ अ लगने से बदल गया इसी प्रकार सत् का अर्थ होता है अच्छा। अगर हम इसे संग के साथ जोड़ें तो हमारा नया शब्द बनेगा सत्संग यानी जिसका साथ अच्छा हो इसी प्रकार दु का अर्थ होता है बुरा या कठिन। इसे हम गुण शब्द में जोड़ें तो हमारा नया शब्द बनेगा दुर्गुण अर्थात बिना गुण वाला इन्हें हम कुछ और उदाहरणों से और अच्छी तरह समझेंगे जैसे अनु का अर्थ है पीछे, हमने इसे मूल रूप में जोड़ा तो यह बनेगा अनुरूप यानी उसके रूप के समान। बच्चों 1 उपसर्ग लगने से मूल शब्द का अर्थ परिवर्तित हो जाता है। मूल शब्द एक अर्थ पूर्ण शब्द होते है और उपसर्ग को हम अकेले प्रयोग नहीं कर सकते यह मूल शब्द के प्रारंभ में लगते हैं। इस टी0एल0एम0 के लर्निंग आउटकम में है कि इससे बच्चों के शब्द भंडार में वृद्धि हुई। बच्चों में शुद्ध हिंदी पढ़ने और लिखने की क्षमता विकसित हुई । छात्र उपसर्ग बनाने के तरीके समझते हैं। छात्र उपसर्ग के उदाहरण बता लेते हैं। छात्र उपसर्ग जोड़कर नवीन शब्द बना लेते हैं।

धन्यवाद

आओ बताए एक तथ्य

श्रीमती नीतू खरबंदा
सहायक अध्यापिका
संविलियन विद्यालय गुलावठी

कुछ पंक्तियां ऐसी हैं जिनके माध्यम से खेल–खेल में हम पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी का पता भी लगा सकते हैं और उसे स्मरण भी कर सकते हैं ।

हनुमान चालीसा में कहा गया है:

"युग सहस्त्र योजनपर भानु!
लिलयो ताहि मधुर फल जानु !!

1 युग = 12000 वर्ष
1 सहस्त्र = 1000
1 योजन = 8 मील
युग × सहस्त्र × योजन = 12000 × 1000 × 8 मील
= 96000000 मील
1 मील = 1.6 किमी
96000000 मील = 96000000 × 1.6kms =
153600000 कि.मी.

यह पृथ्वी और सूर्य (भानु) के बीच की सटीक दूरी है।

जो यह साबित करता है कि हनुमान जी ने इसे एक मधुर फल (मधु फल) के रूप में समझते हुए, ग्रह सूर्य पर छलांग लगाई थी।

गुरू

श्रीमती सविता चौधरी
प्र0अ0
प्रा0वि0 जैनपुर
वि0ख0 गुलावठी

गुरु एक है ज्योति जिसने
तम अज्ञान का दूर भगाया।
अपनी ज्ञान किरण से जिसने
इस सारे जग को चमकाया।।

गुरु सुगंधित पुष्प है ऐसा
जिसने जीवन को महकाया।
गंध ज्ञान की यहाँ बिखेरी
जीवन के पथ को सरसाया।।

गुरु एक है माली जिसने
सब पौधों को काट सँवारा।
रुप व्यवस्थित दिया सभी को
और प्रगति में दिखा सहारा।।

गुरु एक कुंभकार है सच्चा
छात्र घटों का रुप सँवारा।
कभी प्यार से कभी डाँट से
हर बच्चे का जन्म सुधारा।।

गुरु एक महान नायक जिसने
अनुगमन करना सिखलाया।
जीवन पथ की पगडंडी पर
कठिन राह को सरल बनाया।।

गुरु गगन सब बना असीमित
ज्ञान व स्नेह का है भंडार।
बच्चों को दे प्यार अपरिमित
प्रेम भाव का किया संचार।।

ईश्वर देकर जन्म जी को, करता है जग का निर्माण।
ज्ञान का दे भंडार अनोखा, गुरु करता युग का निर्माण।।

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

दिल्ली की सैर

श्री शकील खान
प्रा0 वि0 सोहनपुर
वि0 ख0 गुलावठी

मैं शकील खान प्रा0 वि0 सोहनपुर वि0क्षे0 गुलावठी जिला बुलन्दशहर में स0अ0 पद पर पिछले छः साल से कार्यरत हूँ। ग्रामीण क्षेत्र के स्कूल में अध्यापन करते मैंने महसूस किया कि ये बच्चे गाँव से बाहर की दुनिया से अधिक परिचित नहीं होते। आर्थिक संसाधन व शिक्षित न होने के कारण अभिभावक अपने बच्चों को बाहरी दुनिया से नहीं जोड पाते। मैं ये बात हमेशा से महसूस करता था कि हमारे बच्चों की तरह ये बच्चे भी शैक्षिक भ्रमण पर जायें और नयी जानकारी प्रात करें।

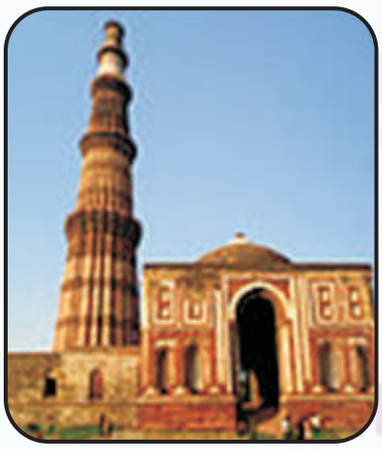

फरवरी 2019 की बात है बसन्त पंचमी के दिन विद्यालय का अवकाश था। मैंने 8 से 10 दिन पहले से बच्चों से जानना चाहा कि क्या वह दिल्ली घूमने मेरे साथ जायेंगे। बच्चे यह सुनकर बहुत खुश हो गये और जाने के लिये तैयार भी। पर इस विषय में मेरे लिये आवश्यक था कि बच्चों के माता पिता की सहमति हो। मैंने अभिभावकों से बात की तो 9 बच्चों के माता. पिता ने सहमति दी।

मैं उस दिन सुबह उठकर अपने निवास स्थान से उन बच्चों को लेने स्कोर्पियो गाड़ी से उनके घर गया और 9 बच्चों को गुलावठी से दिल्ली ले गया। रास्ते से मैंने बच्चों के खाने. पीने का सामान व कुछ दवाईयां व पानी लिया। जैसे ही गाड़ी शहर की चौडी सड़कों पर तेज गति से दौड़ी बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं था।

11 बजे हम दिल्ली पहुँच गये। दिल्ली में इंडिया गेट, सांइस म्यूजियम, व नेहरु तारामंडल का भ्रमण कराया। इंडिया गेट पर बच्चों ने खूब मौजमस्ती की। नेहरु तारामंडल की दुनिया उनके लिये नई व निराली थी। फिर हम सांइस म्यूजियम गये। वहां घूम कर बच्चों ने दिलचस्पी के साथ चीजें देखीं। शाम होते–होते हम वहां से निकले क्यों कि बच्चों को सुरक्षित घर पहुँचाना भी मेरी जिम्मेदारी थी। शाम 8:00 बजे बच्चों को गांव मे छोड़कर मैं वापस अपने घर की ओर चल दिया।

एक विशेष भावना के साथ जिनमें प्रेम, सहयोग, उत्तरदायित्व की मिलीजुली अनुभूति थी।

विद्यालयों का बदलता स्वरूप

प्राथमिक विद्यालय
गनौराशेख,
विकास क्षेत्र गुलावठी

विद्यालयों का बदलता स्वरूप

प्राथमिक विद्यालय गनौराशेख, विकास क्षेत्र गुलावठी

शैक्षिक नवाचार

नीतिका
प्राथमिक विद्यालय पहाड़पुर हवेली
विकासखण्ड शिकारपुर

मैं नीतिका प्राथमिक विद्यालय पहाड़पुर हवेली विकासखण्ड शिकारपुर में सहायक अध्यापिका के रूप में कार्यरत हूँ। मेरा सदैव से ये प्रयास रहा कि मैं बच्चों को शिक्षण रुचिकर व आकर्षक रूप में प्रदान करूं। ताकि उनके लिए शिक्षा बोझिल ना हो वे रुचि लेते हुए अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकें।

इसके लिए सबसे पहले मैंने वॉल पेंटिंग की जिसमे मैने बच्चों के पाठ्यक्रम से सम्बंधित चित्रों को दीवार पर रंगों से उकेरा, उनके कमरे को सुंदर मनोहारी बनाया, कोशिश की की मेरी दीवारे बोलें और बच्चों को कुछ ना कुछ सिखाएं।

इसके बाद मैने आर्ट और क्राफ्ट का प्रयोग करते हुए सभी विषयों से संबंधित विभिन्न प्रकार के नवाचारी टी0एल0एम0 निर्मित किये। साथ ही कुछ कविताओं का लेखन भी किया जिससे बच्चे आसानी से बहुत सी बातों को सीख सकें। और बहुत से पज़ल्स का निर्माण भी किया जिनसे ना केवल हम बच्चों को बहुत सी बातें सिखा पाते हैं बल्कि उनके लर्निंग आउटकम को भी प्राप्त कर पाते हैं।

साथ ही पपेट्री का शिक्षण में प्रयोग करके बच्चों को बड़े ही सरल तरीके से कठिन से कठिन टॉपिक को आसानी से समझाने का प्रयास किया ।

मैने बुलंदशहर डायट में मास्टर ट्रेनर के रूप में कई साल बहुत से अध्यापकों को आर्ट क्राफ्ट पपेट्री व संगीत प्रशिक्षण के द्वारा आर्ट और क्राफ्ट पपेट्री और संगीत द्वारा शिक्षण में दक्ष बनाया तथा विभिन्न प्रशिक्षणों के माध्यम से बहुत से विद्यालयों के बच्चों को आर्ट और क्राफ्ट, पपेट्री आदि के प्रयोग से अधिगम प्राप्ति के लिए दक्ष किया।

मैं शिक्षक हूँ

कुमार विनय मेरठी
स0अ0, प्रा0वि0 महौली
वि0ख0 गुलावठी

मैं शिक्षक हूँ, निर्माता हूँ,
विद्या गुण धर्म का दाता हूँ।
निर्माण प्रलय को अपनी ही
गोदी में लेकर चलता हूँ।
मैं द्रौण गुरु का वंशज हूँ,
मैं गुरु वशिष्ठ की छाप हूँ।
अवनि के आँचल में ज्वलित
सत–धर्म–अगन की ताप हूँ।

मैं शिक्षक हूँ.....
ब्रह्मा का वरदान हूँ,
मैं बृहस्पति सन्तान हूँ।
सरस्वती की वीणा की,
इक मनभावना सी ठान हूँ।
ज्ञान के पक्के रंगों से,
मैं नित नवरचना करता हूँ।
नन्हीं कलियों के चितवन में,
मैं आशाओं को भरता हूँ।

मैं शिक्षक हूँ.....
सूर्य समान स्वयं जलकर,
अज्ञान का दर्प मिटाता हूँ।
मैं छोटे–छोटे हिरनों को,
सिहों के सदृश्य बनाता हूँ।
मैं कर्मभूमि में सम कसम के,
आगे–आगे बढ़ता हूँ।
इन कक्षाओं के वर्तमान से,
देश की किस्मत गढ़ता हूँ।
मैं शिक्षक हूँ.....

जग के दुलारे प्यारे बच्चे

श्रीमती सुधा आर्य
स0अ0, प्रा0वि0 पिपहेरा
वि0ख0 अनूपशहर

जग के दुलारे प्यारे बच्चे
नन्हें नन्हें प्यारे बच्चे,
दिल के सच्चे प्यारे बच्चे।

जीवन पथ पर बढ़ते जाओ तुम,
मान देश का बढ़ाओ तुम।
जीवन में अच्छे इंसान बनो तुम,
चंचल सुंदर प्यारे बच्चे।
नन्हें नन्हें.....

अटल तुम्हारा इरादा हो,
आगे बढ़ने का वादा हो।
चोटी सफलता की छू लो तुम,
हिम्मत वाले प्यारे बच्चों।
नन्हे नन्हे प्यारे.....

सुख की हरदम छाया हो,
न कोई अपना–पराया हो।
दुःख से हरदम दूर रहो तुम,
जग के दुलारे प्यारे बच्चे
नन्हें नन्हें.....

कबाड़ से जुगाड़

मौ. सलीम अख्तर
उ0 प्र0 विद्यालय बरौली बासुदेवपुर
विकास क्षेत्र – स्याना

मैं उच्च प्राथमिक विद्यालय बरौली बासुदेवपुर (1 से 8) विकास क्षेत्र – स्याना जनपद बुलंदशहर में इंचार्ज प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हूं 13 अगस्त 2013 में प्रोन्नति उपरांत मैं प्राथमिक विद्यालय बरौली बासुदेवपुर–2 में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हुआ और तब से इसी विद्यालय में कार्यरत हूँ। अगस्त 2019 को इस विद्यालय का उच्च प्राथमिक विद्यालय बरौली बासुदेवपुर में संविलियन हो गया।

मेरे द्वारा बच्चों को खेल खेल में शुरू से ही शिक्षा प्रदान करने का अथक प्रयास रहा है तथा इसी के साथ साथ बच्चों को प्रत्येक विषय कला से जोड़कर आगे बढ़ाने का प्रयास किया जिसमें बच्चे किसी भी विषय के प्रकरण के भाव को चित्रों के माध्यम से जल्दी समझ जाया करते थे। मेरे विद्यालय के बच्चों को कला के साथ–साथ क्राफ्ट के प्रति जागरूक कर शिक्षा को और अधिक रुचि कर करने का प्रयास किया है। सन 2018 से मेरे द्वारा कला, क्राफ्ट के साथ–साथ एक और नवाचार किया जिसमें बच्चों को शून्य निवेश "कबाड़ से जुगाड़" के प्रति जागरूक किया जिसमें कोई भी व्यय की आवश्यकता नहीं होती।

सर्वप्रथम मेरे द्वारा अधिकतर निष्प्रयोज्य(कबाड़) सामग्री से टी एल एम तैयार किए गए जिसमें बच्चे शिक्षण में और अधिक रुचि लेने लगे तथा बच्चों को निष्प्रयोज्य सामग्री से सुंदर, सजावटी और प्रयोग में आने वाली वस्तुएं तैयार करने हेतु प्रेरित किया। मेरे द्वारा इस नवाचार से मेरे विद्यालय के बच्चों में बहुत सारी अच्छी आदतों का विकास हुआ है । जैसे–

1. बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक।
2. बच्चों में कलात्मक क्षमता का विकास।
3. बच्चे स्वच्छता के प्रति जागरूक हुए, अब वह अपने घर की निष्प्रयोज्य सामग्री कचरे के रूप में फेंक कर प्रदूषण नहीं फैलाया करते हैं।
4. बच्चों में वैज्ञानिक भाव उत्पन्न होना।
5. बच्चों में नए–नए कलात्मक विचारों का जन्म।
6. स्वच्छता के प्रति जागरूकता।
7. टी एल एम के रूप में बच्चों को किसी भी प्रकरण को समझने में सहायता मिलना।
8. बच्चों का समूह में सहयोग के साथ कार्य करना आदि।

EDUCATION

RICHA CHAUDHARY
ASSISTANT TEACHER
PS BIRAULI
ANOOPSHAHR

Education is a powerful tool which differentiates living beings from others. It has an immense power to transform an individual's life and a society as a whole. It is the most significant tool in eliminating poverty and unemployment. In addition, education benefits an individual in various ways. It helps a person to take better and informed decisions.

Furthermore, education is also responsible for providing with an enhanced lifestyle.

When we talk from the countries viewpoint, even then education plays a significant role. This ensures the overall growth and development of a nation.

As socrates once said

" Education is the kindling of a flame, not the filling of a vessel"

With education one can enhance the productivity and can do a task better. It is a doorway to success which requires hardwork, dedication and more after which one can lead a successful life ahead.

In conclusion, education makes us a better person and teaches us various skills. It enhances our intellect and the ability to make rational decisions. It spurs the individual growth and nation as a whole.

प्रेरकप्रसंग- चन्द्रशेखर आजाद

जोगेन्द्र पाल सिंह
प्र0अ0
प्रा0वि0 बीहरा नं01, अगौता

भारतीय आजादी का संघर्ष वैसे तो अनगिनत ऐतिहासिक तारीखों को समाहित किऐ हुए है लेकिन सन् 1906 में 23 जुलाई सोमवार का दिन देश प्रेम, त्याग, तपस्या, आत्मसम्मान एवं बलिदान की नई कहानी लिखने वाले वीर के सूर्य की तरह उदय होने का दिन था। परिवार ने उस वीर का नाम चन्द्रशेखर रखा।

चन्द्रशेखर का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के बदरका गांव में हुआ था। लेकिन अकाल पडने के कारण इनके पिता पंडित सीताराम तिवारी गांव छोड कर मध्यप्रदेश के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र भाबरा चले गये थे। अतः कुछ विद्वानों द्वारा इनका जन्म भाबरा में भी बताया गया है। माता जगरानी देवी के लालन पोषण में चन्द्रशेखर का प्रारम्भिक जीवन भाबरा में ही बीता।

अंग्रेजी शासन में पले बढ़ें चन्द्रशेखर बचपन से ही अंग्रेजों की अत्याचारी नीतियों के कारण ब्रिटिश शासन से नफरत करने लगे थे। 1919 में हुए जलियांवाला बाग नरसंहार ने उन्हें अंदर तक झकझोर कर रख दिया था। तभी से उनके मन में एक आग धधक रही थी।

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

गाँधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन खत्म किये जाने पर सैकडों छात्रों सहित चन्द्रशेखर भी सड़को पर उतर आये और गिरफ्तार हुए। 15 साल की उम्र में जब यह बच्चा जज साहब के सामने पेश हुआ तो उन्होंने पूछने पर अपना नाम आजाद पिता का नाम स्वतंत्रता बताया। क्रांतिकारी गतिविधियों की संलिप्तता पर अंग्रेजों ने 15 साल के बालक को 15 कोड़ों की सजा सुनाई। इस घटना के बाद बालक चन्द्रशेखर ने अपना नाम आजाद रख लिया।

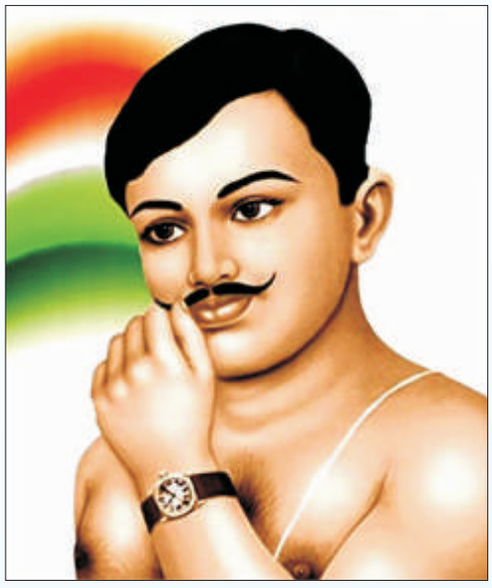

गाँधी जी द्वारा चौरी–चौरा की घटना के कारण सन् 1922 में असहयोग आंदोलन को वापस ले लिया था। इससे निराश आजाद ने गरम दल के क्रांतिकारियों के साथ मिल गये ओर 1 अगस्त 1925 में काकोरी कांड को अंजाम दिया तथा उन सभी के साथ मिलकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन किया। अब आजाद का एक ही लक्ष्य था पूर्ण आजादी। लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला लेने के लिये चंद्रशेखर आजाद ने अंग्रेजी सरकार में सहायक पुलिस अधीक्षक जॉन पायंटस सांण्डर्स को मार डाला था। अपने जीवनकाल में आजाद हमेशा अंग्रेजी हुकुमत के लिये आतंक का पर्याय रहे।

अंग्रेज चन्द्रशेखर आज़ाद को तो पकड़ नहीं सके लेकिन बिस्मिल,अशफाक उल्ला खां एवं ठाकुर रोशन सिंह को 19 दिसम्बर 1927 तथा उससे 2 दिन पहले राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी को फांसी पर लटकाकर मार दिया।

दिल्ली एसेम्बली बम काण्ड के आरोपियों भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव को फांसी की सजा सुनाये जाने पर आजाद काफी आहत हुए। आज़ाद ने मृत्यु दण्ड पाये तीनों की सजा कम कराने का काफी प्रयास किया

27 फरवरी 1931 को वे इलाहाबाद गये और जवाहरलाल नेहरू जी से मिले और आग्रह किया कि वे गांधी जी पर लॉर्ड इरविन से इन तीनों की फाँसी को उम्र–कैद में बदलवाने के लिये जोर डालें। नेहरू जी ने जब आजाद की बात नहीं मानी तो आजाद ने उनसे काफी देर तक बहस भी की। इस पर नेहरू जी ने क्रोधित होकर आजाद को तत्काल वहाँ से चले जाने को कहा तो वे भुनभुनाते हुए बाहर आये और अपनी साइकिल पर बैठकर अल्फ्रेड पार्क चले गये।

अल्फ्रेड पार्क में अपने एक मित्र सुखदेव राज से मिले और इस बारे में चर्चा कर ही रहे थे कि सीआईडी का एसएसपी नॉट बाबर भारी पुलिस बल के साथ जीप से वहाँ आ पहुंचा। दोनों ओर से हुई भयंकर गोलीबारी हुई और इसी मुठभेड़ में चंद्रशेखर आजाद सिर्फ 25 वर्ष की आयु में शहीद हो गये। पुलिस ने बिना किसी को इसकी सूचना दिये आज़ाद का अंतिम संस्कार कर दिया था।

इलाहाबाद यानी की आज के प्रयागराज के पुराने लोग कहते हैं कि अल्फ्रेड पार्क (जिसका नाम बदलकर आजाद पार्क कर दिया गया है) में साल 1931 में 27 फरवरी के दिन उनका सामना अंग्रेजों से हो गया था। इस दौरान दोनों तरफ से ताबड़तोड़ गोलियां चलीं। आजाद ने 5 गोलियां अंग्रेजों पर फायर की। जब उन्हें अहसास हो गया कि वे अब यहां से बचकर नहीं निकल पाएंगे तब उन्होंने आखिरी गोली खुद को मार ली। वे नहीं चाहते थे कि वे अंग्रेजों की गोली से मरें। इसलिए हमेशा आजाद रहने वाले चंद्रशेखर सदा के लिए आजाद हो गए और उनकी इस प्रेरणा से देश में युवाओं के भीतर क्रांति की लहर पैदा हो गई।

आजाद ने कहा था

"हम आजाद हैं आजाद ही रहेंगे"

विद्यालयों का बदलता स्वरूप

उच्च प्राथमिक विद्यालय (1–8)
औरंगाबाद
विकास क्षेत्र लखावटी

विद्यालयों का बदलता स्वरूप

उच्च प्राथमिक विद्यालय (1–8)
औरंगाबाद
विकास क्षेत्र लखावटी

बचपन

भारती खत्री
प्राथमिक विद्यालय
फतहपुर गकरंदपुर
सिकंद्राबाद

याद पुरानी बचपन की वो,
बात पुरानी बचपन की वो।
अम्मा की गोदी में बैठे,
चूरन गोली खाना।
बाबा की उँगली को थामे,
सुबह –सैर को जाना।
आंगन में लेटे –लेटे ही,
हवा से बातें करना।
एसी, कूलर बिना ही,
दिनभर हाथ से पंखा झलना।
सखी–सहेली संग मिलकर के
गुड़ियों का ब्याह रचाना।
पेड़ों की डालों पर झूले,
फिर –फिर पींग बढ़ाना।
लुक्का –छिप्पी, गिल्ली डंडा,
खो–खो और कबड्डी।
नित नये ही खेल रचाते,
रहा ना कोई फिसड्डी।
खुले गगन की ठंडी रात में,
छत पर जाकर सोना।
तारों की गिनती में उलझे,
महका था हर इक कोना।
आज कही जब अपनी दास्ताँ,
अपने दो अंशों को।
चकित रह गए सुनकर दोनों,
बात मेरे बचपन की वो।
याद पुरानी बचपन की वो।
बात पुरानी बचपन की वो।

मेरा सपना

सविता
(प्रधान अध्यापिका)
प्राथमिक विद्यालय
नौदेई डिबाई बुलंदशहर

आओ बच्चों आज मैं तुम्हें सपने देखना सिखाती हूं।
इसी बहाने आज मैं तुम्हें एक कविता लिखाती हूं।

तुम जो बनना चाहो वह व्यवसाय चुन लेना,
लेकिन बड़े होने तक थोड़ा मेरी सुन लेना।

मैं चाहती हूं मेरा हर एक बच्चा ऊंचे पद पर हो।
कोई डॉक्टर तो कोई सैनिक तो कोई आदर्श शिक्षक हो।

यह सपने मेरी आंखों के हैं जो तुम्हारी आंखों में भर दूं,
तुम्हें प्रेरणा देकर मैं अपना यह फर्ज पूरा कर दूं।

मेरी इच्छा है कि तुम सपना बड़ा देखो,
उसे पूरा करने में एक पल ना रुको।

अगर शिक्षक बनो तुम तो आदर्श स्थापित करना,
अपने ही जैसे सौ शिक्षक तैयार तुम करना।

कभी ना करो बाल मजदूरी तुम्हें बहुत आगे बढ़ना है,
हर व्यवसाय में मेरे बच्चे हों यह सपना पूरा करना है।।

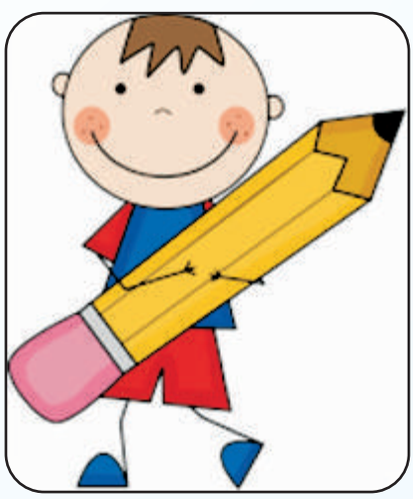

मैजिक कलर बॉक्स

नीरज गौर
सहायक अध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय
तिल बेगमपुर, सिकंद्राबाद

मिशन प्रेरणा के अंतर्गत नवचारों की श्रृंखला को आगे बढाते हुये. मैने एक नवाचार "मैजिक कलर बॉक्स " बनाने का प्रयास किया है । इस नवाचार से हम बच्चों को रंगों की पहचान करा सकते है साइंस नवाचार के अंतर्गत मेने एक" मैजिक कलर बॉक्स" बनाया है जिसमे एक –एक करके अनेक रंगों के कलर बॉक्स खुलते है अब हम एक बच्चे को बुलायेंगे और वह उस कलर बॉक्स को खोलेगा और बॉक्स के अंदर उसको और एक बॉक्स दिखाई देगा, जिसका नाम वह हिन्दी व अग्रेजी दोनो भाषाओं में बतायेगा। फिर दूसरा बच्चा आयेगा और इस बॉक्स को खोलेगा तो एक और बॉक्स निकलेगा उसका नाम बतायेगा इस तरह बॉक्स के अंदर बॉक्स निकलते जायेंगे।

सभी बॉक्स खुल जाने पर बच्चे के लिए उसमें एक छोटा सा उपहार निकलेगा जो सभी रंगो के सही नाम बताने वाले बच्चे को दिया जायेगा ।

इस प्रकार मेरा यह नवाचार खेल विधि के माध्यम से बच्चों को रंगों के नाम सीखने में मदद करेगा और प्रोत्साहित भी करेगा।

धन्यवाद

अक्षरों का अबेकस

छवि शर्मा
सहायक अध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय तिल बेगमपुर
सिकंद्राबाद

मिशन प्रेरणा के अंतर्गत नवाचारों की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए मैंने (छवि शर्मा) एक नवाचार "अक्षरों का अबेकस "बनाने का प्रयास किया है।

इस नवाचार में हम बच्चों को भाषा विषय में वर्णों से शब्दों को बनाना सिखाएंगे। इस नवाचार के अंतर्गत मैंने एक अबेकस स्टैंड व उसमें पिरोने हेतु वर्ण लिखे हुए ब्लॉक्स बनाए हैं। हम एक–एक करके बच्चों को बुलाएंगे, व उन्हें दो वर्णों से बनने वाले शब्द मौखिक रूप से बताएंगे। बच्चा उस शब्द के वर्णों को पहचान कर उन ब्लॉक्स को ढूंढेगा जिन पर वह वर्ण लिखे हुए हैं और फिर एक–एक करके अबेकस के स्टैंड में डालेगा।जैसे 'बस 'शब्द बनाने के लिए बच्चा 'बस 'शब्द में ब और स वर्णों को पहचानेगा और उन ब्लॉक्स को अबेकस के स्टैंड में डालेगा , जिन पर ब और स लिखे हैं। इस प्रकार बार–बार प्रयास करने से

बच्चा दो अक्षर वाले शब्द पढ़ना व बनाना सीख जाएगा। दो वर्णों के शब्दों के बाद हम बच्चों को तीन व चार वर्णों के शब्द भी बनाना व पढ़ना सिखा सकते हैं। इस नवाचार में बच्चों को शब्द सिखाने के बाद हम ब्लॉक्स पर मात्राएं भी बना सकते हैं वह बच्चों को मात्रा वाले शब्द सिखा सकते हैं। इस प्रकार मेरा यह नवाचार बच्चों को हिन्दी भाषा के शब्द बनाना व पढ़ना सीखने में मदद करेगा।

धन्यवाद।

कायाकल्प

श्वेता शर्मा
सहायक अध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय तिल बेगमपुर
सिकंद्राबाद

मिशन प्रेरणा से हम सबको,
आज मिली है नई दिशा
बिखरेंगी शिक्षा की किरणें ,
आएगी फिर नई सुबह ।
उत्तर प्रदेश प्रेरक प्रदेश ,
उत्तर प्रदेश प्रेरक प्रदेश।।

शुद्ध पेयजल ,बाल शौचालय
नल जलापूर्ति भी है ,
टाइलीकरण ,दिव्यांग शौचालय,
ग्रुप हैंड वॉशिंग भी है।
उत्तर प्रदेश प्रेरक प्रदेश ,
उत्तर प्रदेश प्रेरक प्रदेश।।

क्लास रूम का टाइलीकरण,
श्यामपट्ट का भी है नवीकरण
रसोई घर की सुंदरता ,
रंगा–पुता स्कूल भी है ।
उत्तर प्रदेश प्रेरक प्रदेश,
उत्तर प्रदेश प्रेरक प्रदेश ।

सुंदर सी एक रैंप बनी है,
विद्युतीकरण भी पूरा है
ऐसा है मेरा विद्यालय,
अब यह सपना पूरा है ।
उत्तर प्रदेश प्रेरक प्रदेश ,
उत्तर प्रदेश प्रेरक प्रदेश।।

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश प्रेरक प्रदेश

मेरी माँ

ललित कुमार
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय बड्डा वाजिदपुर–1
स्याना

तू ही जननी तू ही सब कुछ,
तुझ में समाया सब संसार है ।
ममता की तेरी छाँव में,
सिमटी खुशियां अपार हैं।।

आंखें खुली तो तुझको देखा,
तुझमें ही तो सब ज्ञान है।
कैसे कह दूं कि बहुत पर्याय हैं मां के,
साक्षात तू ही तो मेरा भगवान है।।

तू ही शक्ति तू ही प्रेरणा,
तू ही सर्वशक्तिमान है।
मेरा हर कदम तेरा ऋणी,
यह मुझ पर तेरा एहसान है।

तेरी हर खुशी मेरी खुशी,
कोई मोल नहीं तेरे प्यार का।
तेरा साया सदा मुझ पर रहे,
ये भगवान से मेरी अरदास है।।

कान्हा की तू मैया बनी,
बनी गजानंद की माता।
तू सदा मेरी मैया बने,
यही तो मेरी शान है।।

'हिमांशु' की है ये सब से गुजारिश,
सबको करना मां का सम्मान है।
कोई तकलीफ आए जब उसको,
तो खुद का त्याग देना आराम है।।

आओ सब याद कर लो उसको,
जिसने दिए हर पल बलिदान हैं ।
मुस्कराकर चरण छू लो उसके,
बस यही तो उसका अभिमान है।।

हम शूरवीर कहलाते हैं...

धर्मेन्द्र कुमार शर्मा
प्राथमिक विद्यालय सराय 1
स्याना

पहले जो थी बातें अपनी आज भी वो ही बातें हैं
इतिहासों के पन्नों पर.....हम शूरवीर कहलाते हैं

अगर कदम जो रखा जमीं पर चौतरफा भटका देंगे
शीश काटके बाजारों में.....३. खूँटी पर लटका देंगे
अगर छुआ जो माँ का दामन देश काल कर देंगे हम
सिन्धु नदी में बहते जल का...रंग लाल कर देंगे हम
धड़ उखाड़ने शीश काटने अब भी हमको आते हैं
इतिहासों के पन्नों पर .....हम शूरवीर कहलाते हैं

हमने तुझको प्यार दिया तु भावनाओं से खेला है
मातृभूमि के बटवारा कर... हमने तुझको झेला है
गद्दारी विश्वासघात का ऐसा जाल बुना तुमने
गीदड़ शेरों से भिड़ जाएं ऐसा सुना नहीं हमने
कहते–कहते सदियां बीती आज भी कहते जाते हैं
इतिहासों के पन्नों पर..... हम शूरवीर कहलाते हैं

समझौता है भूल हमारी बार–बार फँस जाते हैं
घोंप पीठ में छुरा हमारी हमपर वो हँस जाते हैं
भूल हमारी भी है जो...उनको मौका देते हैं हम
एक शीश के बदले क्यों ना बीस शीश लेते हैं हम
मत पूछो ये वीर सिपाही क्या खोते क्या पाते हैं
इतिहासों के पन्नों पर... हम शूरवीर कहलाते हैं

पहले जो थी बातें अपनी आज भी वो ही बातें हैं
इतिहासों के पन्नों पर .....
हम शूरवीर कहलाते हैं

समुदाय की सहभागिता

अंजना महेंद्र सिंह
सहायक अध्यापिका
उच्च प्राथमिक विद्यालय (1–8) जोखाबाद

विद्यालय के विकास में समुदाय की सहभागिता बहुत आवश्यक है अभिभावक जब विद्यालय के प्रति झुकाव रखते हैं तो छात्रों की शिक्षा, नामांकन दर, उपस्थिति समेत विद्यालय के रखरखाव से सम्बंधित कई विषयों का समाधान स्वतः ही सामने आ जाता है। इसलिए हम हर महीने के आखिर में पी0टी0एम0 कराते हैं जिन बच्चों के माता–पिता पी0टी0एम0 में किसी पारिवारिक कारणों से नहीं आ पाते हैं तो उन्हें उनकी सहूलियत के हिसाब से आने के लिए कहते हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रम में अभिभावकों एवं ग्राम वासियों को शामिल किया जाता है। बच्चों को उनकी उपलब्धि के लिए पुरस्कृत करते समय विशेष ध्यान रखा जाता है कि उनके अभिभावक भी उनके साथ हो और अभिभावकों को भी सभी के सामने सराहना करके सम्मानित किया जाता है। महान व्यक्तियों की जयंती पर प्रबंध समिति के सदस्यों को आमंत्रित किया जाता है। छात्र/छात्रा पंजीकरण बढ़ाने के लक्ष्य को पूरा करने में निम्न बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है–

1. सबसे पहले अभिभावकों से संपर्क किया उन्हें बच्चों को रोजाना विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित किया। बच्चों के विद्यालय नहीं आने पर फोन पर या घर जाकर संपर्क किया।

2. प्रार्थना सभा में प्रार्थना के बाद प्रेरणा गीत, फिर सुविचार उसके बाद मुख्य समाचार फिर P.T. ड्रम के साथ P.T. कराते हैं।

3. बच्चों के साथ दोस्ताना व्यवहार।

4. बच्चों को Star of the Month को उपस्थिति में, Behaviour में और Marks में Select किया और पुरस्कृत किया।

5. सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया।

6. खेलकूद दिवस मनाया।

7. विदाई समारोह मनाया।

8. नए छात्रों का स्वागत उन्हें टीका लगाकर और मिठाई के साथ किया।

9. जन्माष्टमी, रक्षाबंधन, दीपावली आदि पर्वों पर रंगोली, मेहंदी, राखी, बांसुरी, मुकुट एवं मटकी बनाने की प्रतियोगिता कराई।

10. बच्चों को उनके हर अच्छे कार्य के लिए प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार देकर उनके अंदर प्रतियोगिता की भावना को जागृत किया जिससे वह अच्छा प्रदर्शन करें।

हमें सकारात्मक सोच और समर्पित व्यवहार कुशलता से अपने विद्यालय को सामाजिक विश्वास का केन्द्र बनाना चाहिए।

धन्यवाद

एक शिक्षाप्रद हिंदी कहानी

अलका चौधरी
प्रा0वि0 मढैया पवसरा
वि0ख0 अगौता
बुलन्दशहर

जो कोशिश करते हैं वही जीवन में सफल होते हैं।

बहुत पुरानी बात है किशनगढ़ राज्य में विक्रमादित्य नाम का राजा राज्य करता था। एक बार उसने अपने राज्य के लोगों की परीक्षा लेने की सोची। यह सोचकर उसने एक दिन सुबह–सुबह जाकर रास्ते में एक बड़ा सा पत्थर रखवा दिया और छिपकर देखने लगा कि क्या होता है। अब सड़क से जो कोई भी निकलता उसे बड़ी परेशानी होती, पर किसी ने भी उस पत्थर को रास्ते से हटाने की कोशिश नही की। कुछ देर बाद राज्य के मंत्री तथा अन्य धनी बडे लोग भी वहाँ आये लेकिन इन लोगों ने भी पत्थर को हटाने का कोई प्रयास नही किया। सभी राजा को ही दोष दे रहे थे कि रास्ते में इतना बडा पत्थर पडा है और राजा इसे हटावाते क्यों नही है। कुछ देर बाद वहाँ पर एक गरीब किसान आया जिसके जिसके सिर पर सब्जी का बडा सा गट्ठर रखा हुआ था जब वह पत्थर के पास से गुजरने लगा तो उसे अपने सिर से सब्जी का गट्ठर उतारकर नीचे रख लिया और पत्थर को पूरी ताकत के साथ हटाने में जुट गया। वो पत्थर काफी बडा था किन्तु किसान ने हार नहीं मानी ओर कुछ ही देर में रास्ते से पत्थर को हटा दिया जैसे ही वो वहाँ से चलने लगा उसने देखा पत्थर वाली जगह पर एक थैला पडा हुआ है जो कि राजा ने पत्थर के नीचे छुपा दिया था। किसान ने थैला खोला तो उसने देखा उसमें सोने के सिक्के थे और एक पत्र भी था जिसमें लिखा था पत्थर हटाने वाले को राजा की तरफ से ईनाम। अब तो किसान खुशी के मारे फूला नही समा रहा था।

दोस्तों इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि जो लोग प्रयास करते हैं वो ही अपने जीवन में सफल हो पाते हैं और जो दूसरों के सहारे बैठे रहते हैं वे कभी सफल नहीं हो पाते।

विद्यालयों का बदलता स्वरूप

प्राथमिक विद्यालय
नौसाना
विकास क्षेत्र बुलन्दशहर

विद्यालयों का बदलता स्वरूप

प्राथमिक विद्यालय
नौसाना
विकास क्षेत्र बुलन्दशहर

मेरा प्यारा बचपन

मनोज कुमार कर्दम
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय
भूतगढ़ी

कितना प्यारा था वो बचपन।
कितना न्यारा था वो बचपन।।

खाना–पीना और खेलना, जब थकते सो जाते थे।
तनिक बात पर हंस देते थे, तनिक पे ही रो जाते थे।।

छुपमछुपाई, गिल्ली – डण्डा, कंचे, खेले गेंदतड़ी।
नवरात्रों में झांझी माई, टेसू मांगने जाते थे।।

खीर बनी तो हुई अमावस, पूर्णमासी पकवान बने।
बूढ़े बाबू के मेले में, झूला झूलने जाते थे।।

हाथी, चीता, शेर–शेरनी, ये सब देखे सर्कस में।
बन्दर, भालू, सांप–सपेरे, खेल दिखाने आते थे।।

कागज़ की कश्ती तैराई, जहाज उडाए कागज़ के।
केंची साइकिल सीख चलाना, खूब तेज दौड़ाते थे।।

हम ही अंतिम पीढ़ी हैं, जो तख्ती ले स्कूल गये।
सरकंडे की कलम से लिखते, घोटा खूब लगते थे।।

मिट्टी के चूल्हे – चाखी, और छीके टंगे उसारों में।
घासलेट से लालटेन, डिबिया, स्टोव जलाते थे।।

जब सीखे थे टाइम देखना, सबको समय बताते थे।
दो माचिस में बांधके धागा, टेलीफोन बनाते थे।।

शकरकंद और आलू भूने, चूल्हे के अंगारों में।
जामुन, बेर, शहतूत तोड़ने, जंगल में भी जाते थे।।

दस पैसे में आइसक्रीम, चुस्की खाई चार आने में।
दो रूपये में तो बाबू हम मेला घूम आ जाते थे।।

रेडियो पर रागनी सुनी और टेपरिकॉर्डर पर गाने।
वीसीआर लाकर किराये पर, फ़िल्में चार चलाते थे।।

गलियों में टायर को चलाना, झूला झूलना पैरों पर।
अटकन – बटकन खेल था अपना, लट्टू खूब घुमाते थे।।

दीवाली पर आतिशबाजी, रंग खेलते होली पर।
और दशहरा पर कुलियों के, कांटे–बाट बनाते थे।।

टीवी पर रामायण देखी, चित्रहार और रंगोली।
बदले में टीवी वाले, एन्टीना ठीक कराते थे।।

जिल्द किताबों पर मंढते थे, अखबारों को कॉपी पर।
कक्षा के मॉनिटर बन गये, सब पर धोंस जमाते थे।।

जब घर आतीं बुआ या मौसी, फल–मिठाई वो लातीं थी।
पैसे देकर जातीं थी तो, साहूकार बन जाते थे।।

रोज रात को दादी माँ से, सुनी कहानी परियों की।
दादा जी की कमर पे चढ़के, उनकी कमर दबाते थे।।

चाचा–चाची, ताऊ–ताई, और इतने सारे भाई–बहिन।
चूल्हे सबके एक ही थे और साथ में रहते–खाते थे।।

कितना प्यारा था वो बचपन।
कितना न्यारा था वो बचपन।।

जल चक्र

श्रीमती आशु शर्मा
प्राथमिक विद्यालय
पीर बियाबानी
सिकंदराबाद

आप सोचते होंगे कि आसमान से गिरी बारिश की हर एक बूंद या आप के पीने के पानी का प्रत्येक गिलास हर बार नया है परंतु यह हमेशा से यहीं पर है और यह पानी / जल का भाग है।

- सूरज की गर्मी जलचक्र को कार्य करने के लिए ऊर्जा प्रदान करती है।
- सूरज समुद्र से पानी को भाप बनाकर पानी की बूंद में बदल देता है ।
- यह ना दिखने वाली भाप वातावरण में ऊपर जाती है जहां वायु ठंडी है पानी की भाप ठंडी होकर संघनन बादलों में बदल जाती है ।
- ज्वालामुखी भाप बनाते हैं जो कि बादलों का निर्माण करते हैं ।
- वायु तरंगे बादलों को पृथ्वी के चारों तरफ ले जाती हैं ।
- बादलों के रूप में बनी जल की बूंदें ,जोकि बारिश (वर्षा / बर्फ)के रूप में धरती पर गिरती हैं ।
- ठंडी जलवायु में वर्षा बर्फ , हिम और ग्लेशियर का निर्माण करती हैं ।
- बर्फ पिघल कर प्रवाह में बदल जाती है जो नदी में, समुद्र में और भूमि के अंदर जाता है ।
- कुछ बर्फ पिघलने की अवस्था को छोड़कर सीधे ही हवा में वाष्पित होती है। (ठोस रूप को गर्मी से वाष्पित करके भाप बनाकर फिर से ठोस बनाने की प्रक्रिया)
- भूमि पर बारिश प्रवाह के रूप में पहाड़ से नीचे बहती है।
- झीलों नदियों तथा समुद्र को जल उपलब्ध करवाती है।
- बारिश का पानी रिस कर भूमि में चला जाता है और जब यह पानी ज्यादा गहराई तक पहुंचता है तो भूजल को पुनः भरता है ।
- झीलों व नदियों से भी पानी / जल भूमि में चला जाता है।

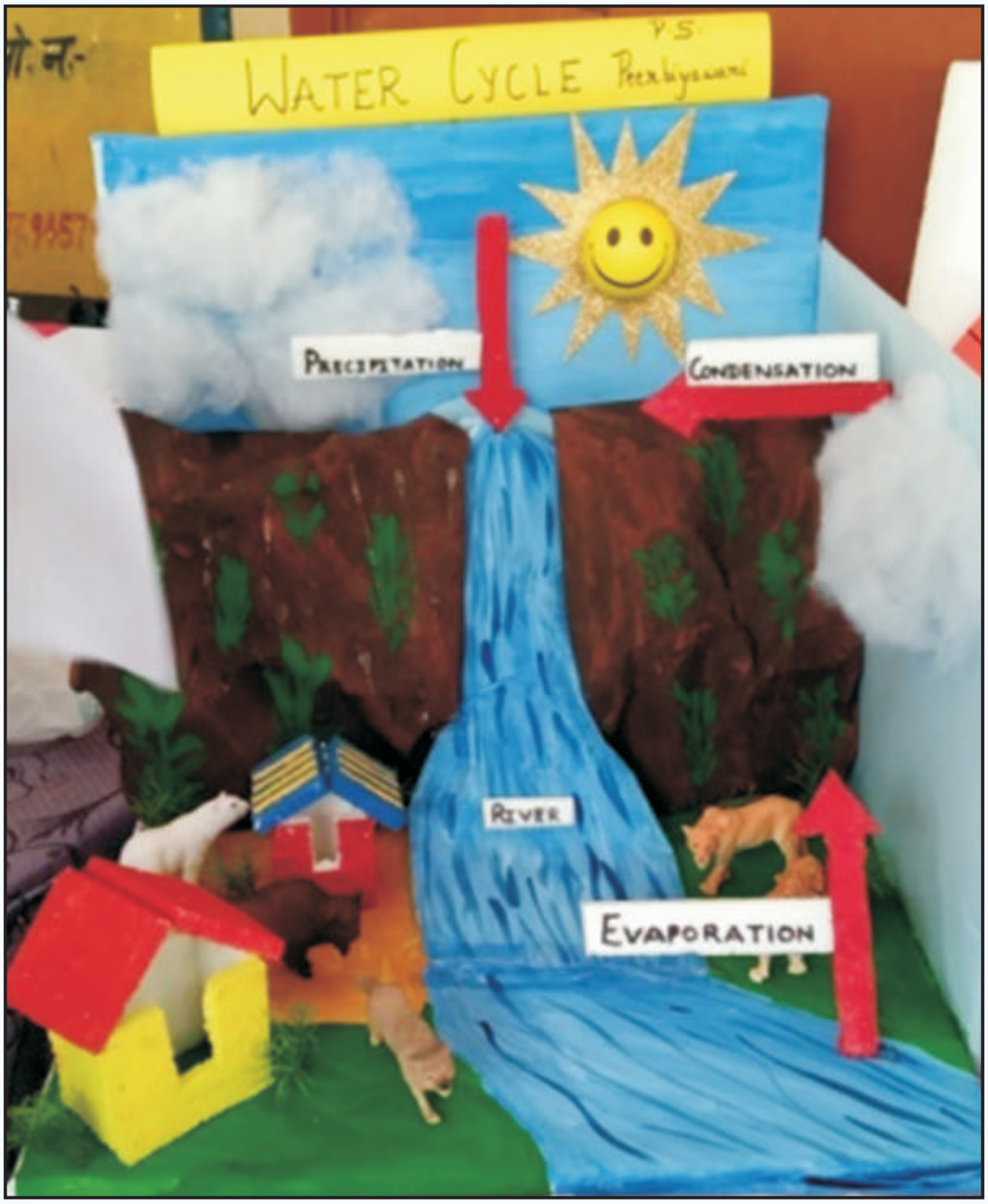

- भूमि सतह के समीप के भूजल को पौधे लेते हैं ।
- कुछ भूजल का नदियों तथा झीलों से रिसाव हो जाता है तथा सतह पर झरने के रूप में प्रवाह होता है।
- पौधे भोजन को ग्रहण करते हैं तथा अपनी पत्तियों से वाष्पोत्सर्जन या भाप में परिवर्तित करते रहते हैं ।
- कोई भूजल भूमि में बहुत गहराई से चला जाता है और बहुत लंबे समय तक वहीं रहता है ।
- सतत जल चक्र बनाने बनाए रखने के लिए भूजल समुद्र में बहता है।

स्वेटर

अर्चना रानी
उच्च प्राथमिक विद्यालय भैंसोड़ा स्याना

ठंड बहुत है अम्मा सुनो,
प्यारा सा एक स्वेटर बुनो।

सत्यमेव जयते लिख देना,
तिरंगा एक बना ही देना।

पहनकर जब मैं विद्यालय जाऊं,
आदर्श कन्या मैं कहलाऊं।

सभी को बताऊं बार–बार,
राष्ट्रीय वाक्य है ये हमारा।

तीन रंग का तिरंगा प्यारा,
हर रंग का अर्थ है न्यारा।

केसरिया बलिदान सिखाता,
हम में त्याग का भाव जगाता।

अब आई है श्वेत की बारी,
शांति का संदेश सुनाती।

नीले रंग का चक्र है इसमें,
चौबीस तीली लगी हैं इसमें।

दिन के ये घंटे बतलाती,
प्रगति पथ पर हमें चलाती।

सबसे बाद में हरा है आता,
समृद्धि संपन्नता ये दर्शाता।

सभी को लगता स्वेटर प्यारा,
मेरे मन को है ये भाता।

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

त्यौहार

श्रीमती जिज्ञासा ढींगरा
उच्च प्राथमिक विद्यालय धराऊं
खुर्जा

बताते हैं त्यौहार बहुत सी बातें,
जो दिखती नहीं हर रोज,
पर होती हैं बहुत काम की बातें।
न हो कोई रोक–टोक ऐसा हो त्यौहार,
मनाओ ऐसे जो जीवन में लेकर आये बहार।
त्यौहार है हमारे दिल की खुशी,
इसलिए करो वो काम जिससे मिले असीम खुशी
आजकल रहते हैं सब बहुत ही व्यस्त,
न है समय पास किसी के,
सब रहते हैं बहुत ही मस्त।
पर एक त्यौहार है बना ऐसा,
जो मिला दे अपनों को, करके बसेरा।
अब घर, घर नहीं रहते,
त्यौहारों पर ही मकान घर है बनते।
सोचो उन फौजी के बारे में,
जो करते जान न्योछावर,
नहीं सोचते खुद के बारे में।
हक़ नहीं है क्या उनके परिवार को,
जो मनाये वो त्यौहार को ?
त्यौहार हम आज जो हैं मनाते,
ये सब उन फौजी के ही सहारे।
उनके परिवार को भी मिले खुशियाँ अपार,
यही हम सबका सपना है बारम्बार।
आओ जिम्मेदारी हम ले अब की बारी,
त्यौहार मनाएं उनके परिवार के साथ,
दिलाएं उन्हें भी खुशियाँ सारी।
जगाए उनको ये अहसास,
हम सब भी हैं उनका अपना परिवार।
चलो, दिल से दिल मिलते चलें,
खुशियों के दीपक जागते चलें।
हाथों से हाथ मिलते चले,
सब दुःख को दूर भगाते चले
और परिवार की एक – एक कड़ी को जोड़ते चले।

विद्यालयों का बदलता स्वरूप

उच्च प्राथमिक विद्यालय (1–8)
दरियापुर
विकास क्षेत्र बुलन्दशहर

विद्यालयों का बदलता स्वरूप

उच्च प्राथमिक विद्यालय (1–8)
दरियापुर
विकास क्षेत्र बुलन्दशहर

योग प्रेरणा गीत

गायत्री (स0 अ0)
प्रा0 वि0 मालागढ़ नं02
वि0 ख0 अगौता, बुलन्दशहर

खुद करें योग सबको करायें।
चलो तन को निरोग बनायें।।
है योग की महिमा पुरानी,
खुशभरी जिन्दगी की कहानी,
आओ खुशियों के दीपक जलायें।।
बिन रोगो की काया सुहानी,
इसको कहते हैं हम जिन्दगानी,
करके आसन फिर रोग भगायें।।
यम नियम की सीढ़ी पर चढकर,
आसन और प्राणायाम अपनाकर,
आचरण अपना शुद्ध बनायें।।

शिक्षा

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

रवि गौतम (स0 अ0)
प्रा0 वि0 लखावटी मिर्जापुर
वि0 ख0 अरनियाँ

बहुत जरुरी होती शिक्षा, सारे अवगुण धोती शिक्षा।
चाहे जितना पढ़ लें हम पर, कभी न पूरी होती शिक्षा।।
शिक्षा पाकर ही बनते हैं, नेता, अफसर और शिक्षक।
वैज्ञानिक, मंत्री, व्यापारी और रक्षक के लिये भी जरुरी होती शिक्षा।।
कर्तव्यों का बोध कराती, अधिकारों को ज्ञान।
प्रत्येक क्षेत्र में सर्वोपरि सम्मान दिलाती शिक्षा।।
पढ़ें भारत और बढ़े भारत, मैं यह बीडा उठाऊँगा।
शिक्षक हूँ, शिक्षा देकर, सोते समाज को जगाऊँगा।।
पढ लिख कर हम बने महान, पूरा हो सर्व शिक्षा अभियान।
माता, पिता और गुरुजन के साथ, बढ़ जाये देश का मान।।
बुद्धिहीन को बुद्धि देती, अज्ञानी को ज्ञान।
सदाचार, सद् गुणों के साथ, जीवन पार लगाती शिक्षा।।

मेरा विद्यालय

ऋषि सिंह
प्र0अ0, प्रा0वि0 टीकमपुर
वि0ख0 जहाँगीराबाद

प्राथमिक विद्यालय टीकमपुर विकास क्षेत्र जहांगीराबाद मैं मैंने 30 अगस्त 2013 को प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया उस समय विद्यालय की स्थिति बहुत खराब थी टूटे फर्श, खराब ब्लैक बोर्ड, खराब हैंड पंप एवं प्रधानाध्यापक कक्ष में पर्याप्त फर्नीचर की भी व्यवस्था नहीं थी।

भौतिक परिवेश को सुधारने की दिशा में मेरे द्वारा किए गए प्रयास

- ग्राम प्रधान व स्वयं के प्रयास से विद्यालय की टूट–फूट, मरम्मत व विद्यालय परिसर में मिट्टी भराव कार्य करवा कर विद्यालय को पहले से बेहतर बनाने का कार्य किया।
- विद्यालय के प्रत्येक कक्षा कक्ष की साज सज्जा का कार्य किया गया है
- रीडिंग कॉर्नर का निर्माण किया गया।
- पुस्तकालय का निर्माण किया गया।
- शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार हेतु कार्य किया गया।
- कक्षा 1 और 2 के बच्चों को खेल–खेल में गिनती व कहानी के माध्यम से हिंदी सिखाने का कार्य किया गया।
- कक्षा 3 व 5 के बच्चों के लिए टी0एल0एम0 के माध्यम से गतिविधि आधारित शिक्षण कार्य किया जा रहा है।

न्यूनतम संसाधन में जितना प्रयास हम कर सकते हैं वह मेरे द्वारा किया गया है। वर्तमान में शैक्षिक नवाचार व शिक्षण अधिगम को प्राथमिकता के रुप में प्रभावी बनाने का कार्य विद्यालय में किया जा रहा है। सभी बच्चों को सोशल मीडिया के अलावा व्यवहारिक तौर पर समूह बनाकर शिक्षण कार्य कराया जा रहा है। कोविड अवकाश के समय में छात्रों को प्रिन्ट आउट के माध्यम से वर्क शीट उपलब्ध कराकर विद्यालयी वातावरण से जोडने के भरपूर प्रयास किया जा रहा है।

गीता तेवतिया
उ0प्रा0वि0 गनौराशेख
वि0क्षे0 गुलावठी

सुरुभि रानी स0अ0
प्रा0वि0 राजपाल सिहं की मढैया (बराल)
गुलावठी

शख्सियत

पूर्व में कबड्डी खेलती थीं परंतु परिस्थितिवश कबड्डी खेलना छोड़ना पड़ा व स्वयं के प्रयास से पावरलिफ्टिंग शुरू किया। कबड्डी में चार बार राष्ट्रीय स्तर पर भाग लिया तथा स्वर्ण पदक प्राप्त किया। राष्ट्रीय स्तर पर पावर लिफ्टिंग 2019 में शुरू किया। वर्तमान स्तर तक सात बार राज्य और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मेडल प्राप्त कर चुकी हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अप्रैल में होने वाली एशिया पैसिफिक चैंपियनशिप में भाग लेने हेतु भारत का टोक्यो में प्रतिनिधित्व करेंगी। शादी के बाद भी परिवार व पति का साथ मिला और परिस्थितियां भिन्न होने के बाद भी पावरलिफ्टिंग को जारी रखा। वर्तमान परिस्थिति में ऑपरेशन से बेटी होने के उपरांत भी खेलना जारी रखा। परिवार का पूरा सहयोग रहा । वर्तमान में गीता तेवतिया बेसिक शिक्षा विभाग में उच्च प्राथमिक विद्यालय गनौराशेख विकास खंड गुलावठी में अनुदेशक के रूप में कार्यरत हैं। विभाग को ऐसी शख्सियतों और शिक्षकों पर नाज है।

कबाड़ से जुगाड़

ढेर सारे गत्ते देख कर मैं मम्मी से यह बोली,
इन गत्तों और टूटी फूटी चीजों से भर दो मेरी झोली।।

मम्मी बोली इतने सारे गत्तों का तू क्या करेगी,
बेकार ही घर में इतना कबाड़ भरेगी।
मैं बोली ना मम्मी मैं इन गत्तों को लेकर जाऊँगी,
और इससे बहुत सुन्दर–सुन्दर T.L.M बनाऊँगी।।

जब वो T.L.M मैं अपने विद्यालय में बच्चों को दिखाऊँगी,
अपने हर प्रकरण को और अधिक सरल बना पाऊँगी।

एक दिन में जा रही थी पास के बाजार ,
कुछ थर्माकॉल के टुकड़े पडें थे सड़क के उस पार।
कुछ थे अंडाकार कुछ थे उसमें गोल,
मैंने सोचा ये तो मेरे लिए हैं बहुत अनमोल।।

जैसे ही मैंने उन्हें उठाने की सोची,
तभी मुझे देख रहा था वहाँ बैठा एक मोची।
नजर बचाकर सबसे मैं वापस घर को आई,
उन थर्माकॉल को न लाने पर मैं बहुत पछताई।।

फिर भी मैंने अपने टूटे–फूटे गत्तों से बहुत से T.L.M. को बनाया,
और फिर उनसे मैंने अपने विद्यालय को चमकाया।
फिर जिसने भी देखा हमारे विद्यालय में जाके,
देखकर वहाँ की सूरत खुली रह गयीं सबकी आँखे।।

तब सबको कबाड़ से जुगाड की महिमा समझ में आयी,
अप्रयुक्त वस्तुओं से कुछ नया बनाने में नहीं है कोई बुराई।।

शैक्षिक नवाचार

हरिओम सिंह (शि0मि0)
प्रा0वि0 दारापुर, वि0ख0 पहासू
बुलन्दशहर

उद्देश्य

कहानी कविता के माध्यम से शिक्षण अधिगम में रुचि उत्पन्न करना।

क्रियाविधि

बच्चो को भयमुक्त वातावरण देने हेतु उन्हें मनोरंजक कविताएं सुनाना, जरुरी है। जिससे बच्चों के ठहराव की स्थिति को अच्छा किया जा सकता है। कविता मनोरंजक होने के साथ–साथ छोटी–छोटी लाइनों की हो तथा बच्चों के आस पास के वातावरण से सम्बंधित हो। उसी क्रम में एक छोटी सी कविता हाव–भाव गतिविधि के साथ मेरे द्वारा प्रस्तुत की जाती है। कविता के अंश निम्नलिखित हैं–

मदारी बजाये डुगडुगी,
हाथी हिलाये सूँड।

बन्दर के सिर बैठी मेंढकी,
दम दमादम कूद।

मदारी बजाए डुगडुगी,

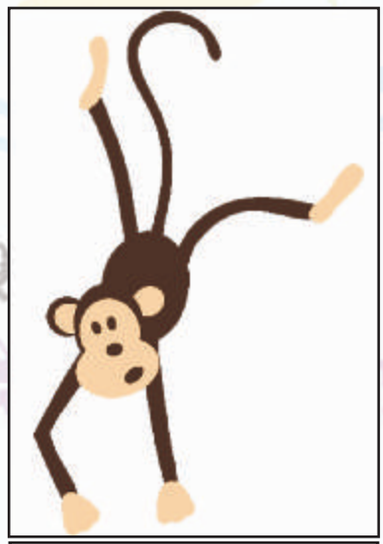

भालू आये नाचता,
बन्दरिया दे रही नाश्ता।

खुश हो बच्चों ने अब ताली बजायी,
तितली भी है अब इठलाती आयी।

मदारी बजाए डुगडुगी

निष्कर्ष

मेरे विचार से बच्चे इस तरह अधिक रोचकता से शिक्षण अधिगम में सक्रिय रहेंगे।

धन्यवाद

मेरी शिक्षण यात्रा

मधु जौहरी
प्रा0वि0 वलीपुरा
वि0ख0 बुलन्दशहर

शिक्षा क्षेत्र से मेरा जुड़ाव बहुत पुराना है। एक अरसा हो गया है विभाग और विद्यालय से जुड़े हुए। उम्र के इस पड़ाव में मैंने शिक्षा में बहुत बहुत से उतार–चढ़ाव देखे हैं। बदलते प्रत्येक समय में कोशिश की है कि समय के साथ शिक्षा एवं शिक्षण–अधिगम से संदर्भित बदलावों के साथ कदमताल मिलाकर चल सकूं। वर्तमान समय में शिक्षा में व विद्यालय में नित नई कार्यशैलियाँ व कार्य पद्धतियां आ रही हैं। प्रधानाध्यापक होने के नाते मेरा कर्तव्य है कि उन सभी कार्य शैलियों एवं कार्य पद्धतियों को अपनाना सीखूं व अपने समस्त स्टाफ से उनको अपने विद्यालय में लागू करा सकूं। इसी क्रम में विभाग द्वारा छोटे छोटे नन्हे मुन्नो का जन्मदिन विद्यालय में ही मनाने का क्रिया कलाप विद्यालय से जुड़ा और बहुत अच्छा लगा छोटे–छोटे बच्चों का जन्मदिन जब हमने विद्यालय में ही मनाया। जिससे हम सामाजिक और सामुदायिक रूप से बच्चों से व बच्चों के परिवार से जुड़ते हैं। जन्मदिन कार्यक्रम उपरांत बच्चे व उनके अभिभावक बहुत खुश दिखे। सच में यह एक नया अनुभव था। यह अनुभव मुझे अपने बचपन की याद दिला गया। टोपियां रंग बिरंगे गुब्बारे व कागज की रंग बिरंगी झालरों से विद्यालय सजाया गया बच्चों के लिए केक और पेस्ट्रीज मंगाए गए और विधिवत तरीके से एक–एक करके छात्र छात्राओं से जिन का जन्मदिन था उनसे केक कटवाया गया। उसके केक व पेस्ट्रीज को सभी बच्चों में आपस में बांटा गया। मेरे लिए प्राथमिक विद्यालय वलीपुरा विकास खंड बुलन्दशहर के प्रधानाध्यापक के तौर पर विद्यालय में मनाया गया यह जन्मदिन उत्सव हमेशा यादगार रहेगा।

धन्यवाद

क्या होता कम्प्यूटर जी

गीता वर्मा
प्र0अ0
प्राथमिक विद्यालय धमैड़ा कीरत नं02
वि0ख0 अगौता बुलन्दशहर

क्या होता कम्प्यूटर पापा,
क्या होता कम्प्यूटर जी?

यह डिब्बा है जादू वाला,
जिसमें जादूगरी भरी है।

बिना पंख के जो है उड़ती,
कम्प्यूटर एक सोनपरी है।

कोई न जिसको कर पाए,
उसको करता कम्प्यूटर जी

कम्प्यूटर पर चित्र बनाओ,
मनमर्जी के रंग लगाओं।

चाहो तो सब उलट पलट कर
अपनी दुनिया नई बनाओ।

सबको खूब हंसाता रहता,
पढ़ा लिखा यह जोकर जी।

क्या होता कम्प्यूटर पापा,
क्या होता कम्प्यूटर जी?

यह होता कम्प्यूटर बेटा,
यह होता कम्प्यूटर जी।

जागृति
एक पहल
वर्ष1 II प्रथम अंक II 2021

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

आदरणीय मुख्य विकास अधिकारी श्री अभिषेक पाण्डेय जी के प्रयासों से प्राथमिक विद्यालय, मुकुंदगढ़ी विकास खण्ड सिकन्द्राबाद में स्थापित प्रदेश की प्रथम एस्ट्रॉनोमी लैब

मिशन शक्ति
नारी सुरक्षा, नारी सम्मान
नारी स्वावलंबन
बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ
THE FANTASTIC FEMALES (SEASON-4)
रविवार 07 मार्च 2021
मीना

नवाचार-समतुल्य भिन्न

दीप्ति कौत्स
सहायक अध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय तिल बेगमपुर
सिकंद्राबाद

मिशन प्रेरणा कार्यक्रम के अनुसार नवाचारों के माध्यम से बच्चों को बेहतर तरीके से पढ़ाने और लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति के लिए मैंने (दीप्ति कौत्स सहायक अध्यापिका) अपने विद्यालय में एक नवाचार किया है। जिसमें मैंने समतुल्य भिन्न को समझाने का प्रयास किया है। मैंने अपने नवाचार को कुल 5 भागों में विभाजित किया है। पहले भाग में एक पूरे हिस्से को प्रदर्शित किया है और दूसरे हिस्से में पहले जैसे भाग को दो भागों में बांटकर 1/2 +1/2 भाग दर्शा कर हम बच्चों को बता सकते है कि जब हम दोनों भागों को मिलाते हैं तो पूरा एक भाग बनता है । इस प्रकार हमने दिखा दिया

1/2 + 1/2 =1

तीसरे भाग में हमने उसी भाग को 4 बराबर हिस्सो में बांटा, जिसमे हम बच्चो को समतुल्य भिन्न के बारे में बता सकते हैं कि

1/4 + 1/4+ 1/4 + 1/4 = 1

1/4+ 1/4+1/2 =1

इसी प्रकार चौथे भाग को 8 समान भागों में और पांचवे भाग को 16 समान भागों में विभाजित किया।जिसके द्वारा अब हम बच्चों को निम्न भिन्नो को दिखा कर समझा पाएंगे।

1/2+1/2=1

1/4+1/4=1/2

1/4+1/2+1/4=1

1/8+1/8+1/8+1/8=1/2

1/16+1/16+1/16+1/16=1/4

इस प्रकार इस नवाचार के माध्यम से बच्चे भिन्न की अवधारणा को आसानी से समझ पाएंगे ।

यात्रावृतांत ऐतिहासिक शहर अजमेर

अनिल कुमार
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय पीतमपुर
विकास क्षेत्र ऊँचागांव

विनीत पंवार
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय अम्बा
विकास क्षेत्र अनूपशहर

बात जनवरी 2015 की है एक जरुरी कार्य से अजमेर जाना हुआ, अकेले जाने का बिल्कुल भी मन नहीं था, इसलिए अपने मित्र एवं साथी शिक्षक श्री अनिल जी को फोन लगा दिया और दोस्ती की कसमें देते हुए साथ चलने के लिए आग्रह किया। अनिल जी भी मना नहीं कर पाए और चलने के लिए तैयार हो गए। अगले ही दिन दोपहर के समय हम दिल्ली से ट्रेन पकड़ कर अजमेर के लिए रवाना हो गए राजस्थान स्थित अजमेर एक ऐतिहासिक शहर है जो अपनी धार्मिक गतिविधियों के लिए जाना जाता है। यह शहर प्रसिद्ध अरावली पर्वत श्रेणी पर स्थित है। जो चौहान राजा अजयराज सिंह द्वारा बसाया गया था। यहां मुख्यत : श्रद्धालु ख्वाजा साहब की दरगाह और पवित्र पुष्कर झील के दर्शन के लिए आते हैं। देश–दुनिया से लोग गरीबनवाज एवं दरगाह शरीफ के नाम से विख्यात सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की मजार में मत्था टेकने के लिए आते हैं। दरगाह के ऐतिहासिक दरवाजें देखने लायक हैं। काफी बड़े क्षेत्र पर बनी यह दरगाह राजस्थान में मुख्य आकर्षणों में गिनी जाती है। लेकिन ऐसा नहीं है कि अजमेर में सिर्फ ख्वाजा साहब की दरगाह और पुष्कर झील ही प्रसिद्ध है, यहां और भी कई ऐसे ऐतिहासिक स्थल मौजूद हैं, जिन्हें आप अपनी अजमेर यात्रा में शामिल कर सकते हैं। आइए जानते हैं उन खास स्थानों के बारे में।

आना सागर झील यह एक बेहद ही खूबसूरत कृत्रिम झील है जिसका निर्माण पृथ्वीराज चौहान के पिता आणाजी चौहान ने करवाया था। आणाजी से नाम पर ही इस झील का नाम आना सागर पड़ा। झील के आसपास का इलाका बेहद खूबसूरत है, जहां का दौलत बाग देखने लायक है, जिसका निर्माण जहांगीर ने करवाया था। इस पार्क को सुभाष उद्यान के नाम से भी जाना जाता है। आप इस झील में नौका विहार का आनंद ले सकते हैं।

सोनीजी की नसिया भी देखने लायक स्थान है। यह अजमेर स्थित बेहद खूबसूरत जैन मंदिर है, जिसे चैत्यालय भी कहा जाता है। इन जैन मंदिर का निर्माण सन् 1865 में सेठ बहादुर राय ने मूलचंद सोनी ने करवाया था। यह मंदिर जैन तीर्थकर आदिनाथ को समर्पित है। यह मंदिर आकर्षक वास्तुकला का बेहद शानदार उदाहरण है। खूबसूरत स्तंभों और नक्काशी से सजाया गया यह मंदिर सैलानियों को बहुत ज्यादा प्रभावित करता है। अजमेर की यात्रा के दौरान आप यहां का प्लान बना सकते हैं।

पुष्कर सरोवर इसके अलावा आप चाहें तो विश्व विख्यात पुष्कर झील का भ्रमण कर सकते हैं। यह झील हिन्दू आस्था का एक बड़ा केंद्र है। भारत के पांच पवित्र सरोवर में पुष्कर झील की भी गिनती होती है। विशेष अवसरों पर यहां श्रद्धालु पवित्र स्नान के लिए आते हैं। इसके अलावा पुष्कर अपने प्रसिद्ध पशु मेले के लिए भी जाना जाता है, जिसमें हिस्सा लेने के लिए दूर–दूर से लोग आते हैं। यह पवित्र स्थान ब्रह्मा जी से विशेष संबंध रखता है। अजमेर घूमने आए सैलानी इस झील के दर्शन अवश्य करते हैं। यहां आप ऊंट की सवारी का रोमांचक आनंद ले सकते हैं।

अढ़ाई दिन का झोपड़ा राजस्थान के अजमेर स्थित अढ़ाई दिन का झोपड़ा एक ऐतिहासिक मस्जिद है, जिसका निर्माण 1192 में मोहम्मद ग़ौरी के निर्देश पर कुतुब–उद्–दीन ऐबक ने करवाया था।

यह मस्जिद 1199 में पूरी तरह बनकर तैयार हो गई थी। इस मस्जिद का नाम यहां चलने वाले ढ़ाई दिन के उत्सव (उर्श) के कारण पड़ा ।

कई जानकारों का मानना है कि यहां पहले संस्कृत विद्यालय हुआ करता था, जिसका निर्माण राजा बंसलदेव ने करवाया था। जिसके बाद यहां मोहम्मद ग़ौरी ने पाठशाला को हटाकर मस्जिद का निर्माण करवाया। मस्जिद के निर्माण में खूबसूरत वास्तुकला का इस्तेमाल करवाया गया है। अजमेर की यात्रा के दौरान आप अढ़ाई दिन का झोंपड़ा देख सकते हैं।

प्रसिद्ध तारागढ़ दुर्ग उपरोक्त स्थानों के अलावा अगर आप चाहें तो प्रसिद्ध तारागढ़ दुर्ग की सैर का आनंद ले सकते हैं। इस दुर्ग को **'बुंदी का किला'** भी कहा जाता है। यह किला अढ़ाई दिन की झोपड़ी से बेहद नजदीक में स्थित है। जिसके लिए आपको तारागढ़ की पहाड़ी की 700 फीट की चढ़ाई चढ़नी होगी। इस ऐतिहासिक किले का निर्माण राजा अजय पाल चौहान ने 11वीं सदी में करवाया था। यह राजस्थान के उन किलों में शामिल है जिसकी संरचना पर मुगलिया प्रभाव नहीं पड़ पाया। यह पूरा किला राजपूती अंदाज में बनवाया गया था। दुर्ग में प्रवेश के लिए तीन विशाल द्वारों का निर्माण करवाया गया था। यहां आप खूबसूरत वास्तुकला और नक्काशी का अद्भुत मेल देख सकते हैं।

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

Basic Education Department

Bulandshahr, UP

ISBN 978-93-5607-189-6

₹ 375